सहजो बाई की बानी

[सहज-प्रकाश, जीवन चरित्र सहित]

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

सहजो बाई की बानी

सहज प्रकाश

जीवन-चरित्र सहित

नये पदों के साथ जो अब मिले हैं छापी गई।

यह अपूर्व पुस्तक बाबू अयोध्या प्रसाद साहिब, उर्फ़ लालाजी, रईस आगरा, की आज्ञानुसार छापी गई है।

इलाहाबाद

बेलवेडियर प्रेस, में प्रकाशित हुई।

सन् १९२६ ई०

चौथी बार] [दाम ।≤)॥

संतबानी

तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी
का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी
पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और
क और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।
ान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ
तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे
: फुटकल शब्दों की हालत में सर्वसाधारन के उपकारक पद चुन
: बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे
: कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फ़ुट नोट में दे दिये
बानी है, उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है, और जिन
के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप
दिये गये हैं।

स्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् "संतबानी संग्रह" भाग १
२ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय
बास्त्री ने गदगद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"

और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के बचनों की
री" नाम की गद्य में सन् १८१६ में छपी है, जिसके विषय में
ी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह
स्ता है"।

ों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उनकी
ंको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर

भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिन में प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा
नाम और दाम इस पुस्तक के पीछे सूचीपत्र में देखिये। अभी
ी छापी गई है जिसका दाम ॥।) है।

नामक सचित्र मासिक पत्रिका भी निकालना आरम्भ कर दिया
ाथ ही साथ मनोरञ्जक लेख कहानियाँ और ऐसे महात्माओं के

॥ सूचीपत्र ॥

आवश्यक निवेदन ।

इस चौथे एडिशन में हमने तीसरे छापे की कुल त्रुटियाँ और पाठ भेद निकाल दिये हैं और जो जो बिषय उत्तराखंड (ततिम्मे) की तरह तीसरे छापे में अलग छापे थे उन्हे भी उचित स्थान पर छाप दिया है ।

भक्तशिरोमणि

सहजो बाई का जीवन-चरित्र

सहजो बाई राजपूताना के एक प्रतिष्ठित दूसर कुल की स्त्री थीं जो परम भक्त हुईं और संत मत के अनुसार साध गति को प्राप्त हुईं। इन का जीवन-चरित्र हम ने भक्त-माल और उस प्रकार की कई पुस्तकों में ढूँढ़ा परन्तु कहीं कुछ प्रमाणिक वृत्तान्त न पाया। उन की बानी से इतना निश्चय होता है कि वह सम्बत १८०० में बर्त्तमान थीं और प्रसिद्ध महात्मा चरनदासजी की गुरुमुख चेली थीं जो आप भी मेवात के एक दूसर कुल में प्रगट हुए थे और जिन के अनुयायी भारतवर्ष के देश देशान्तर में अब तक हज़ारों हैं, यद्यपि उन में शब्द अभ्यासी और भेदी बिरले देख पड़ते हैं। सहजो बाई की बानी से चरनदासजी* के जन्म का समय भादों सुदी ३ मंगलवार संबत १७६० बिक्रमी प्रमान होता है।

सहजो बाई के बिषय में कोई कोई चमत्कार के कौतुक प्रसिद्ध हैं परंतु चूँकि उनका कहीं प्रमान नहीं मिलता यहाँ लिखना उचित नहीं है। उनकी गहरी गुरुभक्ति और गति उनकी अति कोमल, मधुर और हृदयबेधक बानी से जानी जा सकती है।

दयाबाई (जिन की कोमल और मधुर बानी अलग छपी है) सहजो बाई की सजाती और गुर-बहिन थीं॥

अधम, एडिटर संतबानी पुस्तक माला।

---

* इन की बानी भाग १ मूल्य ||-), भाग २ मूल्य ||) बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग

सहजो बाई का
सहज प्रकाश।

सतगुरु महिमा का अंग

॥ दोहा ॥

कर जोरूँ परनाम करि, धरूँ चरन पर सीस।
दादा गुरु सुकदेव जी, पूरन बिस्वे बीस ॥१॥
परमहंस तारन तरन, गुरु देवन गुरु देव।
अनुभै बानी दीजिये, सहजो पावै भेव ॥२॥

॥ चौपाई ॥

नमो नमो गुरु देवन देवा। नमो नमो गुरु अगम अभेवा॥
नमो नमो निरलम्भ निरासा। नमो नमो परमातम बासा॥
नमो नमो त्रिभुवन के स्वामी। नमो नमो गुरु अंतरजामी॥
नमो नमो गुरु पातक हरता। नमो नमो पारायन करता॥
गति मति छाके आनँद रूपा। नमो नमो गुरु ब्रह्म सरूपा॥
नमो नमो मम प्रान पियारे। नमो नमो तिर्गुन तेँ न्यारे॥
भक्ती ज्ञान जोग के राजा। सहजो के पुरवो सब काजा॥
जो कोइ सरन तुम्हारी आयौ। तुरियातीत बिज्ञान बतायौ ॥३॥

॥ दोहा ॥

निर्मल आनँद देत हैं, ब्रह्म रूप करि देत।

॥ चौपाई ॥

नमो नमो सुकदेव गुसाईं । प्रगट करी भक्ती जग माहीं ॥
श्रीमतभागवत्भानु प्रकासा । पढ़सुनि कटै तिमिर कीफाँसा
ज्ञान जोग की नौका कीन्ही । चरनदास केवट को दीन्ही ॥
बहुतक पापी जीव चढ़ाये । भवसागर सूँ पार लँघाये ॥
किरपा बल्ली हाथ मैं राखैं । काहू तैं दुरबचन न भाखैं ॥
अमृत बचन बोलि बैठावैं । नर नारी लौं पतित तिरावैं ॥
कलिजुग मैंसतजुगबिस्तारा । नामभक्तिका खोल दुवारा ॥
सुनिसुनि कै जिज्ञासू आवैं । उनहूँ के संदेह मिटावैं ॥५॥

॥ दोहा ॥

गुरु हैं चार प्रकार के, अपने अपने अंग ।
गुरु पारस दीपक गुरू, मलयागिरि गुरु भृंग ॥६॥
चरनदास समरथ गुरू, सर्ब अंग तेहि माहिं ।
जैसे कूँ तैसा मिलै, रीता छाँड़ैं नाहिं ॥७॥

॥ चौपाई ॥

लोहे कूँ पारस होय लागैं । कंचन करैं बेर नहिं ताकैं ॥
सिष पलासचन्दन करि डारैं । मलयागिरि ह्वै कारज सारैं ॥
सिष समान कीट के आवैं । भृंगी ह्वै कर ताहि बनावैं ॥
करै भिरिंगी ढील न कोई । पलटै रूप पाछलो सोई ॥
बिना लोय*दीपक सिष परसैं । ह्वै दीपक तिनहूँ कूँ दरसैं ॥
बकसैंअपनी जोति उजारा । होय चाँदना भवन मँझारा ॥
चरनदास गुरु समरथ ऐसे । सहजो बाई भाखत जैसे ॥
सब गति सबग्रँगहै उन माहीं । उनतैं भेद छिप्योकोइनाहीं ८

॥ दोहा ॥

ज्ञान भक्ति अरु जोग का, घट लेवैं पहिचान ।
जैसी जा की बुद्धि है, सोई बतावैं ध्यान ॥९॥

---

* लौ ।

॥ चौपाई ॥

आप सबन मैं सब तैं न्यारे । चार बुद्धि के मनुष सँवारे ॥
प्रथम बुद्धि जल-लीक खिँचाई । खिँचती जाय सोई मिटिजाई
दूजी बुद्धि लीक रस्ते की । चलै मनोरथ मिटै हिये की ॥
तीजी बुद्धि पाहन की रेखा । घटै सही पर बढ़ै न नेका ॥
चौथी तेल बूंद जल माहीँ । फैलत फैलत फैलत जाही ॥
छोटी से दीरघ परकासै । बरन बरन के रंग निकासै ॥
तीन बुद्धि जग में दरसावे । चौथी बुधि कोइबिर्लै पावै ॥
सहजो बुद्धि सब थोथी कहिये। गुरुकी कृपा सबन में चहिये १०

—:०:—

हरि तैं गुरु की बिशेषता

॥ दोहा ॥

हरि किरपा जो होय तो, नाहीँ होय तो नाहिँ ।
पै गुरु किरपा दया बिनु, सकल बुद्धि बहि जाहिँ ॥११॥

॥ चौपाई ॥

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ । गुरु के सम हरि कूँ न निहारूँ ॥
हरि ने जन्म दियो जग माहीँ । गुरु ने आवागवन छुटाहीँ ॥
हरि ने पाँच चोर दिये साथा । गुरु ने लई छुटाय अनाथा ॥
हरि ने कुटुँब जाल में गेरी । गुरु ने काटो ममता बेरी* ॥
हरि ने रोग भोग उरझायो । गुरु जोगी कर सबै छुटायो ॥
हरि ने कर्म भर्म भरमायो । गुरु ने आतम रूप लखायो ॥
हरि ने मो सूँ आप छिपायो । गुरु दीपक दै ताहि दिखायो ॥

---

* बेड़ी ।

फिर हरि बंध मुक्ति† गति लाये। गुरु ने सबही भर्म मिटाये
चरनदास पर तन मन वारूँ। गुरु न तजूँ हरि कूँ तजि डारूँ॥

॥ दोहा ॥

सब परबत स्याही करूँ, घोलूँ समुँदर जाय।
धरती का कागद करूँ, गुरु अस्तुति न समाय ॥१३॥

॥ चौपाई ॥

गुरु की अस्तुति कहँ लौं कीजै। बदला कहा गुरू कूँ दीजै॥
गुरु का बदला दिया न जाई। मन में उपजत है सकुचाई॥
इन नैनन जिन राम दिखाये। बंधन कोटि काटि मुक्ताये॥
अभय दान दीनन कूँ दीन्हे। देखत आप सरीखे कीन्हे॥
गुरु की किरपा अपरम्पारै। गुन गावत मम रसना हारै॥
सेस सहसमुख निस दिन गावै। गुरु अस्तुति का अन्त न पावै॥
मौन गहूँ अस्तुति कहा करऊँ। बार बार चरनन सिर धरऊँ॥
चरनदास महिमा अधिकाई। सर्बस वारै सहजो बाई॥१४॥

गुरु मारग

॥ दोहा ॥

गुरु मग दृढ़ पग राखिये, डिगमिग डिगमिग छाँड।
सहजो टेक टरै नहीं, सूर सती ज्यों माँड ॥ १५ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के प्रेम पन्थ सिर दीजै। आगा पीछा कबहुँ न कीजै॥
गुरु के पन्थ होय सो होई। मारग आन चलौ मत कोई॥

---

† ऐसी मुक्ति जिस में झीनी माया का बन्धन लगा रहता है।

गुरु के पन्थ पैज* का पूरा। गुरु के पन्थ चलै सो सूरा॥
गुरु के पन्थ चलै सो जोधा। गुरु के पन्थ चलै का बोदा॥
गुरु के पन्थ नहीं ठग लागै। गुरु के पन्थ कपट भय भागै॥
गुरु के पन्थ मुक्ति उजियारा। गुरु के पन्थ नहीं संसारा॥
गुरु के पन्थ मिटै दुख दोई। गुरु के पन्थ महा सुख होई॥
चरनदास कैा पन्थ दुहेला। गुरुमुख चालै ताहि सुहेला।
गुरु के पन्थ चलै सतबादी। सहजो पावै भेद अनादी॥१६॥

गुरु चरन

॥ दोहा ॥

अठसठ तीरथ गुरु चरन, परबी होत अखंड।
सहजो ऐसा धाम नहिँ, सकल अंड ब्रह्मंड॥१७॥
सब तीरथ गुरु के चरन, नित ही परबी होय।
सहजो चरनोदक लिये, पाप रहत नहिँ कोय॥१८॥

॥ चौपाई ॥

सब तीरथ गुरु चरनन लारे। चरन बर्त दृढ़ सदा हमारे॥
चरन कँवल की निसदिन पूजा। परसुँ और देव नहिँ दूजा॥
इष्ट हमारे गुरु के चरना। गुरु के चरन ध्यान हूँ करना॥
गुरु के चरन लगे सो तारे। गुरु के चरन प्रान सूँ प्यारे॥
आसा मनसा और करमना। गुरु के चरन प्रेम चित धरना॥
गुरु के चरन होय सो होना। हानि लाभ कै दुख सुख मरना॥

---

*टेक।

रनजीता* गुरुचरनतुम्हारे । जीवन प्रान अधार हमारे ॥
गुरुके चरनमुक्ति फलदायक । सहजो गुरु के चरन सहायक ॥१६॥

॥ दोहा ॥

गुरु पग निस्चै परसिये, गुरु पग हिरदे राख ।
सहजो गुरु पग ध्यान करि, गुरु बिन और न भाख ॥२०॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के चरन कँवल चित राखूँ । आठ सिद्धि नौ निधि सब नाखूँ ॥
सकल पदारथ गुरु पग माहीं । गुरु पग परसे सब दुख जाहीं ॥
गति मति पलटे गुरु पग हरसे । गुरु पग परसे त्रिभुवन दरसे ॥
गुरु पग परसे ब्रह्म बिचारै । गुरु पग परसे माया छाँड़ै ॥
गुरु पग परसे जोग जुगन्ता । गुरु पग परसे जीवन मुक्ता ॥
गुरु पग परसे बन्धन छूटै । मोह ममत की फाँसी टूटै ॥
गुरु पग परसे हरि पद पावै । रहै अमर ह्वै गर्भ न आवै ॥
चरनदास पग महिमा भारी । बार बार सहजो बलिहारी ॥२१

गुरु आज्ञा

॥ दोहा ॥

गुरु अज्ञा दृढ़ करि गहै, गुरु मत सहजो चाल ।
रोम रोम गुरु को रटै, सो सिष होय निहाल ॥२२॥

॥ चौपाई ॥

गुरु की अज्ञा दृढ़ करि गहिये । गुरु की अज्ञा ही में रहिये ॥
गुरु अज्ञा बिन काज न कीजै । हानि होय तो होने दीजै ॥

---

*चरनदास जी का घरू नाम ।

गुरु की अज्ञा बिघ्न न कोई । गुरु की अज्ञा गुरमुख होई ॥
गुरु की अज्ञा भक्ति बढ़ावै । गुरु की अज्ञा पार लँघावै ॥
गुरु की अज्ञा सकल सिरोमन । गुरुकीअज्ञाचलै सो हरिजन॥
गुरु अज्ञा मानै सोइ साधू । गुरु अज्ञा पद भेद अगाधू ॥
जो कोइ गुरु की अज्ञा भूलै । फिरफिर कष्ट गर्भ मैं भूलै ।
चरनदास गुरु अज्ञा पूरी । बिन अज्ञा करनी सब कूरी॥
अज्ञाकारा गुरमुख नीके । सहजो लोक भोग सब फीके २३

गुरु बिमुख

॥ दोहा ॥

गुरु अज्ञा मानै नहीं, गुरुहि लगावै दोष ।
गुरु निन्दक जग मैं दुखी, मुए न पावै मोष ॥ २४ ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसौं का दरसन नहिं लीजै । चर्चा बात गोष्टि नहिं कीजै ॥
उनका संग करै जो कोई । बेमुख निगुरा निन्दक होई॥
गुरु-दोषी की गति मति गाऊँ । अपने मन हीं कूँ समझाऊँ॥
उन की चौरासी नहिं छूटै । काल जाल जम जोरा लूटै ॥
फिर फिर जूनी संकट आवै । गर्भ बास मैं बहु दुख पावै॥
जग मैं पात बगूला जैसे । जीवत प्रेत निसाचर ऐसे ॥
मन मैला तन सदा उदासी । गल मैं डिम्भ कपट की फाँसी
सहजो तिन सैं दूरहि भाजै । नाम लेत मम रसना लाजै २५

॥ दोहा ॥

जो कुछ करै सो मनमुखी, मेटै गुरमुख रीत ।
भेद बचन समझै नहीं, चलै चाल बिपरीत ॥ २६ ॥

साध कहावै आप कूँ, चलै दुष्ट की चाल।
बाद लिये फूला फिरै, बहुत बजावै गाल ॥२७॥

॥ चौपाई ॥

बेमुख बिषई ज्ञान उचारै। पाँचो जीत न मन कूँ मारै
दारा सुत कूँ हरि गुरु जानै। तनमनबिषय बास लिपटानै।
पाप पुन्य कूँ झूठ बतावै। परनारी परधन चित लावै।
महा अजोगी जोग न ठानै। छल बल झूठ कपट सिध मानै॥
साध संत कूँ ठगिया जानै। नाम भक्ति कूँ तुच्छ बखानै॥
ऐसे अपराधी मति मारे। तृस्ना काम क्रोध के जारे॥
डूबे लोभ लहर के माहीं। सुपने छिमा सील चित नाहीं॥
हिंसा अंकुस लिये दुखदाई। मुख देखै नहिं सहजो बाई॥२८॥

गुरु शब्द

॥ दोहा ॥

गुरु बचन हियरे धरै, ज्यौं किर्पिन के दाम।
भूमि गड़े माथे दिये, सहजो लहै तो राम ॥२९॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के सब्द हिये बिच धारो। गुरमुख गुरु के शब्द सम्हारो॥
तीन लोक जम जोरा लूटै। गुरु के सब्द बिना नहिं छूटै॥
मोह नींद में सब नर पागे। गुरु के सब्द बिना नहिं जागे॥
गुरु के सब्द स्रवन जो जावै। छूटै कुबुधि परम गति पावैं॥
गुरु के सब्द प्रेम उजलावैं। गुरु के सब्द हरि आनमिलावैं॥
गुरु के सब्द जीव बुधि नासैं। गुरु के सब्द अभय पद भासैं॥
गुरु के सब्द राह सोइ चलना। बेद पुरान कहा लै करना॥

चरनदास गुरु सब्द तुम्हारे। हमरे भर्म फन्द सब जारे॥
गुन सब गुरु के बचनै माहीं। सहजो सिष जो बिसरै नाहीं ३०

उपदेश गुरुभक्ति का

॥ दोहा ॥

सिष का माना सतगुरु, गुरु झिड़कै लख बार।
सहजो द्वार न छोड़िये, यही धारना धार ॥ ३१ ॥
गुरु दरसन कर सहजिया, गुरु का कीजै ध्यान।
गुरु की सेवा कीजिये, तजिये कुल अभिमान ॥३२॥
सतगुरु दाता सर्व के, तू किर्पिन कंगाल।
गुरु महिमा जानै नहीं, फस्यौ मोह के जाल ॥३३॥
गुरु सूँ कछु न दुराइये, गुरु सूँ झूठ न बोल।
बुरी भली खोटी खरी, गुरु आगे सब खोल ॥३४॥
सहजो गुरु रच्छा करैं, मेटैं सब दुख दुन्द।
मन की जानैं सब गुरू, कहा छिपावै अन्ध ॥३५॥

गुरु महिमा

॥ दोहा ॥

सहजो कारज जगत के, गुरु बिन पूरे नाहिँ।
हरि तो गुरु बिन क्यौं मिलैं, समझ देख मन माहिँ ॥३६॥
परमेसर सूँ गुरु बड़े, गावत बेद पुरान।
सहजो हरि के मुक्ति है, गुरु के घर भगवान ॥३७॥
अष्टादस और चार षट, पढ़ि पढ़ि अर्थ कराहिँ।
भेद न पावैं गुरु बिना, सहजो सब भर्माहि ॥३८॥

सकल बिकल सब छोड़कर, गुरु चरनन चित लाव।
सहजो निस्चै हरि जपो, बहुर न ऐसो दाव ॥३९॥
दीपक ले गुरु ज्ञान को, जगत अँधेरे माहिँ।
काम क्रोध मद मोह मँ, सहजो उरझै नाहिँ ॥४०॥
सहजो गुरु परताप सूँ, होय समुन्दर पार।
बेद अर्थ गूँगा कहै, बानी कितइक बार ॥४१॥
सहजो सतगुरु के मिले, भये और सूँ और।
काग पलट गति हन्स ह्वै, पाई भूली ठौर ॥४२॥
सहजो यह मन सिलगता, काम क्रोध की आग।
भली भई गुरु ने दिया, सील छिमा का बाग ॥४३॥
निस्चै यह मन डूबता, मोह लोभ की धार।
चरनदास सतगुरु मिले, सहजो लई उबार ॥४४॥
ज्ञान दीप सतगुरु दियौ, राख्यौ काया कोट।
साजन बसि दुर्जन भजे*, निकस गई सब खोट ॥४५॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, रोम रोम उजियार।
तीन लोक दृष्टा भये, मिटयौ भरम अँधियार ॥४६॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, नैना भये अनन्त।
आदि अन्त मध एक ही, सूझि पड़ै भगवन्त ॥४७॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, देख्यौ आतम रूप।
तिमिर गयौ चाँदन भयौ, पायौ परघट गूप ॥४८॥
सहजो गुरु परसन्न ह्वै, मेटयौ मन सन्देह।
रोम रोम सूँ प्रेम उठि, भीँज गई सब देह ॥४९॥
सहजो गुरु परसन्न ह्वै, एक कह्यौ परसंग।
तन मन तैँ पलटो गई, रँगी प्रेम के रंग ॥५०॥

---

*भागे।

सहजो गुरु परसन्न ह्वै, मूँद लिये दोउ नैन ।
फिर मो सूँ ऐसे कही, समझ लेहि यह सैन ॥५१॥
सहजो गुरु किरपा करी, कहा कहूँ मैं खोल ।
रोम रोम पुलकित भई, मुखे न आवै बोल ॥५२॥
चिँउटी जहाँ न चढ़ि सकै, सरसौं ना ठहराय ।
सहजो कूँ वा देस मैं, सतगुरु दई बसाय ॥५३॥
सिष पौधा नौधा अभी, गुरु किरपा की बाड़ ।
सहजो तरवर फैल बड़, सुफल फलै वह झाड़ ॥५४॥
सहजो सिष ऐसा भला, जैसे माटी मोय ।
आपा सौंपि कुम्हार कूँ, जो कछु होय सो होय ॥५५॥
सहजो सिष ऐसा भला, जैसे चकई डोर ।
गुरु फेरैं त्यौं ही फिरै, त्यागै अपना खोर* ॥५६॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, जैसे धोबी होय ।
दै दै साबुन ज्ञान का, मलमल डारै धोय ॥५७॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, मेटै मन सन्देह ।
नीच ऊँच देखै नहीं, सब पर बरसै मेह ॥५८॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, जैसे सूरज धूप ।
सब जीवन कूँ चाँदना, कहा रंक कहा भूप ॥५९॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, समदृष्टी निर्लोभ ।
सिष कूँ प्रेम समुद्र मैं, करदे झोबाझोब ॥६०॥
सहजो गुरु बहुतक फिर, ज्ञान ध्यान सुधि नाहिँ ।
तार सकैं नाहिँ एक कूँ, गहैं बहुत की बाहिँ ॥६१॥
ऐसे गुरु तो बहुत हैं, धूत धूत धन लेहिँ ।
सहजो सतगुरु जो मिलैं, मुक्ति धाम फल देहिँ ॥६२॥

---

* रास्ता, आदत ।

कुटँब जाल जित तित रुप्यो, पसु पंछी नर माहिँ।
सहजो गुरुबर्ती बचै, निगुरे अरुझत जाहिँ ॥६३॥
बार बार नाते मिलैँ, लख चौरासी माहिँ।
सहजो सतगुरु ना मिलैँ, पकड़ निकासैँ बाहिँ ॥६४॥
जन्म जन्म हरि संग ही, मिलि रह्यौ आठो जाम।
सहजो गुरु के बिन मिले, पायौ ना बिसराम ॥ ६५ ॥
सहजो गुरु पूरा मिलै, सिष मैला घट चित्त।
मेह बरसै कालर* जिमीँ, खेत न उपजै छित्त† ॥६६॥
मलयागिरि के निकट जो, सब द्रुम चन्दन होहिँ।
कीकर सीसोँ चीड़ बृच्छ, हुए न कबहूँ होहिँ ॥६७॥
सिष माटी सिष पाथरा, सिष लकड़ी सम जोय।
सहजो गुरु पारस लगे, कैसे कंचन होय ॥ ६८ ॥
सिष्य सराई‡ तेल बिन, बाती भी नहिँ माहिँ।
सहजो गुरु दीपक मिलै, चाँदन होसी नाहिँ ॥ ६९ ॥
सहजो गुरु समरथ कला, सर्बदेसी सब अंग।
कोइ कैसा ही सिष्य हो, सब पर गेरै रंग ॥७०॥
सहजो गुरु रँगरेज सा, सबहीं कूँ रँग देत।
जैसा तैसा बसन हूै, जो कोइ आवै सेत ॥ ७१ ॥
सहजो गुरु दरसन दियो, पूर रहे सब ठौर।
जहाँ तहाँ गुरु ही लखै, दृष्टि न आवै और ॥ ७२ ॥
देखत ही आनंद भये, सतगुरु पहुँचे आय।
भवसागर दुख रूप सूँ, सहजो लई बचाय ॥ ७३ ॥
चरनदास के चरन पर, सहजो वारै प्रान।
जगत ब्याध सूँ काढ़िकर, राख्यो पद निरबान ॥७४॥

---

* कल्लर = ऊसर। † पृथ्वी। ‡ दिया या दीवा।

सहजो गुरु महिमा कही, पढ़ सुनि हिया सिराय* ।
उपजै गुरु की भक्ति दृढ़, दुबिधा दुर्मति जाय ॥७५॥

साध महिमा

॥ दोहा ॥

साध मिले गुरु पाइया, मिटि गये सब सन्देह ।
सहजो कूँ सम ही भयो, कहा गिरवर कहा गेह ॥१॥
साध मिले पूरी भई, जनम जनम को आस ।
सहजो पायौ भाव तैं, सतसंगत मैं बास ॥२॥
सहजो साधन के मिले, मन भयो हरि के रूप ।
चाह गई थिरता भई, रंक लख्यौ सोइ भूप ॥३॥
साध मिले हरि ही मिले, मेरे मन परतीत ।
सहजो सूरज धूप ज्यौं, जल पाले की रीति ॥४॥
साध मिले दुख सब गये, मंगल भये सरीर ।
बचन सुनत ही मिटि गई, जनम मरन की पीर ॥५॥
साध संग मैं चाँदना, सकल अँधेरा और ।
सहजो दुर्लभ पाइये, सतसंगत मैं ठौर ॥६॥
सतसंगत की नाव मैं, मन दीजै नर नार ।
टेक बल्ली दृढ़ भक्ति की, सहजो उतरै पार ॥७॥
साध संग तीरथ बड़ो, ता मैं नीर बिचार ।
सहजो न्हाये पाइये, मुक्ति पदारथ चार ॥८॥
जो आवै सतसंग में, जाति बरन कुल खोय ।
सहजो मैल कुचैल जल, मिलै सु गंगा होय ॥९॥
सहजो संगत साध की, काग हन्स ह्वै जाय ।
तजि के भच्छ अभच्छ कूँ, मोती चुगिचुगि खाय ॥१०॥

---

* ठंडा होय ।

जब चेतै जबही भला, मोह नींद सूँ जाग।
साधू की संगत मिलै, सहजो ऊँचे भाग ॥ ११ ॥
जो जन आवै टूट करि, साधू ह्वै दरसाय।
सहजो साँभर खेत मैं, गिरि साँभर ह्वै जाय ॥ १२ ॥
सहजो संगत साध की, भली भई कुसलात।
नातर आवा गवन मैं, जम की करते घात ॥ १३ ॥
सहजो संगत साध की, छूटै सकल बियाध।
दुर्मति पाप रहै नहीं, लागै रंग अगाध ॥ १४ ॥
साध बृच्छ बानी कली, चर्चा फूले फूल।
सहजो संगत बाग मैं, नाना फल रहे झूल ॥ १५ ॥
सहजो दरसन साध का, दो नैनों भरि लेहि।
तिहूँ ताप नसि जायँगे, सीतल होगी देहि ॥ १६ ॥
सहजो दरसन साध का, देखूँ वारूँ प्रान।
जिन की किरपा पाइये, निर्भय पद निर्बान ॥ १७ ॥

दुष्ट लक्षण

॥ दोहा ॥

दुष्टन की महिमा कहूँ, सुनियो संत सुजान।
ताना दै दै दृढ़ करैं, भक्ती जोग अरु ज्ञान ॥१८॥

॥ चौपाई ॥

धन दुष्टी जो दृढ़ता देई। निन्दा कर पातक हरि लेई॥
दुष्टो त्यागी दीखै भारी। समझ सोच सहजो बलिहारी॥
तज दइ साधसंगगुरुचरना। त्यागी भक्ति ध्यानकाधरना॥
त्यागी उत्तम रहनी गहनी। त्यागी हरि कीलीला कहनी॥

ज्ञान मध्य इस्थिर दसा, ध्यान मध्य गलतान।
सहजो साधू राम के, तजैं बड़ाई मान ॥ २३ ॥
जो सोवैं तौ सुन्न में, जो जागैं हरि नाम।
जो बोलैं तौ हरि कथा, भक्ति करैं निःकाम ॥ २४ ॥
तन मन मेटैं खेद सब, तज उपाधि को चाल।
सहजो साधू राम के, तजैं कनक और बाल* ॥२५॥
दीर्घ बुद्धि जिन की महा, सोल सदा ही नैन।
चेतनता हिरदै बसै, सहजो सीतल बैन ॥ २६ ॥
तन कूँ साधे ही रहैं, चित कूँ राखैं हाथ।
सहजो मन कूँ यौं गहैं, चलै न इन्द्रिन साथ ॥२७॥
नित ही प्रेम पगे रहैं, छके रहैं निज रूप।
सलदृष्टी सहजो कहै, समझैं रंक न भूप ॥ २८ ॥
सुरत नहीं ब्यौहार में, जगत रीत सूँ पीठ।
सनमुख हैं गुरु भक्ति में, सहजो हरि के ईठ† ॥ २९ ॥
साध असंगी सँग तजैं, आतम ही को संग।
बोध रूप आनन्द में, पियैं सहज को रंग ॥ ३० ॥
दुर्जन ना साजन नहीं, नहीं बैर नहिं प्रीति।
सकल बिकल उन के नहीं, सहजो हरि जन रीत ॥ ३१ ॥
सहजो हरि जन मुक्त हैं, डार दुई की पोट।
चाह गई संसा मिटा, बंधन छूटे कोट ॥ ३२ ॥
राग द्वेष सूँ रहित हैं, बैरागी निरबन्ध।
सहजो इच्छा ना रही, माया ब्रह्म की संध ॥ ३३ ॥
आसन संजम साध करि, साधै प्रान अपान‡।
सहजो मुद्रा जौ सधै, तौ जोगी परवान ॥ ३४ ॥

---

* स्त्री। † इष्ट, प्यार। ‡ प्राण और अपान वायुओं के नाम हैं—प्राण अंतर खिंचने वाली स्वासा को और अपान बाहर चलने वाली स्वासा को कहते हैं जिनको प्राणायाम के अभ्यास में साधना पड़ता है।

तीनौं बंध लगाय के, अनहद सुनै टकोर ।
सहजो सुन्न समाधि में, नहीं साँझ नहिं भोर ॥ ३५ ॥
ना सुख बिद्या के पढ़े, ना सुख बाद बिबाद ।
साध सुखी सहजो कहै, लागै सुन्न समाध ॥ ३६ ॥
मुए दुखी जीवत दुखी, दुखी भूख आहार ।
साध सुखी सहजो कहै, पायौ नित्त बिहार ॥ ३७ ॥
चाह दुखी आसा दुखी, महा दुखी अज्ञान ।
साध सुखी सहजो कहै, पायौ केवल ज्ञान ॥ ३८ ॥
धनवन्ते सब ही दुखी, निर्धन हैं दुख रूप ।
साध सुखी सहजो कहै, पायौ भेद अनूप ॥ ३९ ॥
रंक दुखी राजा दुखी, दुखी सकल संसार ।
साध सुखी सहजो कहै, पाया भेद अपार ॥ ४० ॥
ना सुख दारा सुत महल, ना सुख भूप भये ।
साध सुखी सहजो कहै, तृस्ना रोग गये ॥ ४१ ॥

—o—

द्वादस प्रकार के बचन साध के

१ मीठी बोली ।
२ चरपरी बोली ।
३ अमृत-बचन बोली ।
४ सीतल सुगन्ध बोली ।
५ महा फूल बोली ।
६ सलिल बोली ।
७ बिघ्न-बिदार बोली ।
८ शुद्ध सुख सज्जन बोली ।
९ भर्म-निवारन बोली ।
१० भक्ति-दृढ़ावन बोली ।
११ स्थिर बोली ।
१२ साँची बोली ।

द्वादस प्रकार के बचन दुष्ट के

१ पाहन बोली ।
२ काँटेदार बोली ।
३ बिष भुवंग बोली ।
४ [illegible]

५ अकड़े खटक बोली ।
६ हिया-बेध बोली ।
७ खट्टी बोली ।
८ कडुई दुर्गंध बोली ।
९ झूठी बोली ।
१० भरमिक बोली ।
११ निगुरी बोली ।
१२ डिगमिगाट बोली ।

बैराग उपजावन का अंग

॥ दोहा ॥

सहजो भज हरि नाम कूँ, तजो जगत सूँ नेह ।
अपना तो कोइ है नहीं, अपनी सगी न देह ॥ १ ॥
यही कही गुरुदेवजू, यही पुकारैं सन्त ।
सहजो तज या जगत कूँ, तोहि तजैगो अन्त ॥ २ ॥
कलह कलपना दुख घना, सदा रहै मन भंग ।
अक्कस* भरे कूँ छोड़िये, सहजो जग बेढंग ॥ ३ ॥
जैसे सँड़सी लोह की, छिन पानी छिन आग ।
ऐसे दुख सुख जगत के, सहजो तू मत पाग ॥ ४ ॥
अचरज जीवन जगत में, मरिबो साँचो जान ।
सहजो अवसर जात है, हरि सूँ ना पहिचान ॥ ५ ॥
जग से या जग में पगा, जग सँग दीन्हे प्रान ।
राम तजै जग सूँ रचै, सहजो निस्चय हान ॥६॥
झूठा नाता जगत का, झूठा है घर बास ।
यह तन झूठा देख कर, सहजो भई उदास ॥ ७ ॥
जब लग चावल धान में, तब लग उपजै आय ।
जग छिलके कूँ तजि निकस, मुक्ति रूप ह्वै जाय ॥ ८ ॥
कुटँब सँगाती बीच में, आदि अन्त नहिँ होय ।
बीच मिले बिच ही गये, सहजो संग न कोय ॥ ९ ॥

---

* बैर ।

सहजो स्वारथ सब लगे, दारा सुत औ बीर।
जीवत जोतैं बैल ज्यौं, मुए चढ़ावैं सीर* ॥ १० ॥
कोई किसी के संग ना, रोग मरन दुख बन्ध।
इतने पर अपनौ कहैं, सहजो ये नर अन्ध ॥११॥
दरद बटाय सकैं नहीं, मुए न चालैं साथ।
सहजो क्योंकर आपने, सब नाते बरबाद ॥ १२ ॥
मर बिछुड़े जो कुटँब सूँ, बहुर न देखै आय।
महल द्रब्य सन्तान कूँ, सहजो पचै बलाय ॥ १३ ॥
मरि बिछुड़न योँ होइगो, ज्योँ तरवर सूँ पात।
सहजो काया प्रान योँ, मुख सेती ज्योँ बात ॥ १४ ॥
सहजो जीवत सब सगे, मुए निकट नहिं जायँ।
रोवैं स्वारथ आपने, सुपने देख डरायँ ॥ १५ ॥
सहजो धन माँगे कुटँब, गाड़ा धरा बताय।
जो कछु है सो दे हमैं, फिर पाछे मरि जाय ॥१६॥
मुख देखै ढाँपै भजै, तड़ दे तोड़ै नेह।
सहजो पति सुत निज हितू, जारि करैंगे खेह ॥ १७ ॥
काढ़ काढ़ बेगी कहैं, भीतर बाहर लोय।
जीव छुटे सहजो कहै, तन का सगा न कोय ॥१८॥
यह मन्दिर यह नारि है, यह धन यह सन्तान।
तेरो ना सहजो कहै, काहे करत गुमान ॥१९॥
जन्म जुवा सौं हारिहो, कियो न लाहा सूल।
डार पात फल सींच कर, सहजो काटत मूल ॥२०॥
सहजो गुरु परताप सूँ, ऐसी जान पड़ी।
नहीँ भरोसा स्वास का, आगे मौत खड़ी ॥२१॥

---

*जीते जी तो कड़ी मिहनत लेते हैँ और मरने पर अपने मतलब के लिये मन्नत चढ़ाते हैँ।

भीतर का भीतर खुलै, कै बाहर खुलि जाय।
देह खेह ह्वै जायगी, जैहै जन्म गँवाय ॥२२॥
स्वासा दीपक के बुझै, होत अँधेरी देह।
सहजो सूनी प्रान बिनु, जब कैसो हरि नेह ॥ २३ ॥
सहजो फिर पछितायगी, स्वास निकसि जब जाय।
जब लग रहै सरीर में, राम सुमिर गुन गाय ॥२४॥
स्वास खजानो जातु है, ता की सोधो नाहिँ।
सहजो खर्चो का रह्यो, कर हिसाब घर माहिँ ॥२५॥
सहजो नौबत स्वास की, बाजत है दिन रैन।
मूरख सोवत है महा, चेतन कूँ नहिँ चैन ॥२६ ॥
हिरनाकुस से ह्वै मिटे, दुर्योधन सिसुपाल।
कुंभकरन रावन गये, सहजो खाया काल ॥२७॥
निस्चै मरना सहजिया, जीवन की नहिँ आस।
कै टूटी सी झोपड़ी, कै मन्दिर में बास ॥२८॥
कै गरीब सिर टोकरी, कै सिर छत्तर होय।
जन्म मरन में एक से, सहजो भाँति न दोय ॥२९॥
मरना है रहना नहीं, जाना वाही ठौर।
सहजो कै कंगाल हो, कै हो द्रब्य करोर ॥३०॥
आपनहूँ थिर होहिँ जो, करैं और को सोग।
सहजो साथी नाव के, सभी बटाऊ लोग ॥३१॥
बैठि बैठि बहुतक गये, जग तरवर की छाँहिँ।
सहजो बटाऊ बाट के, मिलि मिलि बिछुड़त जाहिँ ॥३२॥
यह रस्ता बहता रहै, थमै नहीं छिन एक।
बहु आवैं बहु जातु हैं, सहजो आँखन देख ॥३३॥
जग देखत तुम जावगे, तुम देखत जग जाय।
सहजो योंही रीति है, मत कर सोच उपाय ॥३४॥

मुए सो काया जारई, बहुरि न मिलिहै आय।
रोये तैं कहा होत है, सहजो झुरै बलाय ॥३५॥
झुरि झुरि के पिंजर भये, रोय गँवाये नैन।
मरे गये सो ना मिले, सहजो सुने न बैन ॥३६॥
जो रोये सूँ बाहुरै, तौ रोवौ दिन रात।
तन छीजै वह न मिलै, सहजो कूड़ी बात ॥३७॥
काहे कूँ रोवत रहौ, कलप न होवै काज।
सहजो मुए सो मरि गये, आवैं काल्ह न आज ॥३८॥
देह निकट तेरे पड़ी, जीव अमर है नित्त।
दुइ मैं मूवा कौन सा, का सूँ तेरा हित्त ॥ ३९ ॥
जो तेरा हित देह सूँ, नख सिख ताही खंड।
जीव अमर सहजो कहै, व्यापक और अखंड ॥ ४० ॥
तेरा थानो क्यौँ मुवा, क्यौँ न रखा गहि बाहिँ।
सहजो बहुतक मिलि छुटे, चौरासी के माहिँ ॥ ४१ ॥
कभुवक तेरा बाप है, कभुवक तेरा पूत।
कभुवक तेरा मित्र है, कभुवक तेरा सूत* ॥ ४२ ॥
जो तेरे सँग प्यार था, जाता वाके साथ।
कै वाही कूँ राखता, सहजो गहि कर हाथ ॥ ४३ ॥
कलप रोय पछिताय थक, नेह तजौगे कूर।
पहिले ही सूँ जो तजै, सहजो सो जन सूर ॥ ४४ ॥
यौँ खाता यौँ सोवता, मीठे कहता बोल।
यह बिचार तू मत करै, चित रहै डाँवाडोल ॥ ४५ ॥
बैठि पहिरि यौँ चालता, बस्तर भूषन लाल।
यह बिचार तू मत करै, छल रूपी जग जाल ॥ ४६ ॥

---

* शत्रु।

आगे रो रो क्या किया, अब क्यों रोवै भाँड ।
संग न आया ना चलै, यह जग झूठी माँड ॥ ४७ ॥
आगे मुए सो जा चुके, तू भी रहै न कोय ।
सहजो पर कूँ क्या झुरै, आपन ही कूँ रोय ॥ ४८ ॥
बहुत गई थोड़ी रही, यह भी रहसी नाहिँ ।
जन्म जाय हरि भक्ति बिनु, सहजे झुर मन माहिँ ॥ ४९ ॥

कर्म अनुसार योनि

॥ दोहा ॥

उपजि उपजि फिर फिर मरौ, जम दे दारुन दुक्ख ।
लाज नहीँ सहजो कहै, धिर्ग तुम्हारो मुक्ख ॥ ५० ॥
पसु पंछी नर सुर असुर, जलचर कीट पतंग ।
सबही उतपत्ति कर्म को, सहजो नाना अंग ॥ ५१ ॥
कर्मन के प्रेरे फिरै, जन्म जन्म दुख होय ।
मुक्ति बिचारो सहजिया, आवागवन जु खोय ॥ ५२॥
जन्म चलो ही जातु है, ये दिन आछे जाहिँ ।
जीवत जागह ना करी, बैठोगे केहि ठाहिँ ॥५३॥
सहजो रहै मन बासना, तैसी पावै ठौर ।
जहाँ आस तहँ बास है, निस्चै करी कठोर ॥ ५४ ॥
देह छुटै मन मैं रहै, सहजो जैसो आस ।
देह जन्म जैसो मिलै, जैसे ही घर बास ॥ ५५ ॥

॥ चौपाई ॥

जा की आस रहै मन्दिर मैं । होकर घूँस बसै सो घर मैं ॥
रहै बासना द्रव्य मँझारा । जन्मै नाग होय पुनि कारा ॥
रहै बासना तिरिया माहीँ । कोटी* स्वान धरै तन आई ॥

---

*योनि । मैं

रहै बासना पुर्षा बर की । कुतिया होय चूहड़े† घर की ॥
जा की रहै पुत्र मैं आसा । सूवर जन्म नीच घर बासा ॥
जा का मन रहै राज दुवारे । हस्ती हो सिर मेलै छारे ॥
रहै बासना नीर पियासी । मीन देह धरि जल की बासी॥
रहै बासना बाहन संगा । होय जन्म ले बाहन‡ अंगा ॥
जहाँ बासना जित ही जाई । यह मत बेद पुरानन गाई ॥
चरनदास गुरु मोहिं बताई । तजो बासना सहजोबाई ५६

॥ दोहा ॥

सहजो लोक प्रलोक की, नहीं बासना ताहि ।
सो वह ब्रह्म सरूप है, सागर लहर समाय ॥ ५७ ॥
जा की गुरु मैं बासना, सो पावै भगवान ।
सहजो चौथे पद बसै, गावत बेद पुरान ॥ ५८ ॥
परमेसुर की बासना, अन्त समय मन माहिँ ।
तन छूटे हरि कूँ मिलै, उपजै बिनसै नाहिँ ॥ ५९ ॥
साध संग की बासना, जेहि घट पूरी सोय ।
मनुष जन्म सतसँग मिलै, भक्ति परापत होय ॥ ६० ॥
सहजो हरि के नाम की, रहै बासना बीर ।
चौरासी संकट कटै, जम की छूटै पीर ॥ ६१ ॥
चौरासी काया पहिर, दुख सहे नाना त्रास ।
भली भई अबके कुसल, चरनदास की आस ॥ ६२ ॥
चौरासी के त्रास सुनि, जम किंकर की मार ।
सहजो आई गुरु चरन, सुमिर्यो सिरजनहार ॥ ६३ ॥
धन जोबन सुख सम्पदा, बादर की सी छाहँ ।
सहजो आखिर धूप है, चौरासी के माहँ ॥ ६४ ॥
चौरासी जोनी भुगत, पायो मनुष सरीर ।
सहजो चूके भक्ति बिनु, फिर चौरासी पीर ॥ ६५ ॥

---

† भंगी । ‡ घोड़ा ।

जन्म दशा

॥ दोहा ॥

जन्म मरन अब कहत हूँ, कहूँ अवस्था चार।
चौरासी जमदंड कूँ, भिन्न भिन्न बिस्तार ॥६६॥
चरनदास अज्ञा दई, सहजो परगट गाय।
तासूँ पढ़ि सुनि जीव की, सकल बन्ध कटि जाय॥६७॥

॥ चौपाई ॥

पापी जीव गर्भ जब आवै। मगन अँधेरे बहु दुख पावै॥
तल मूड़ी ऊपर को पाऊँ। मुख लिंगी*और बिष्टा ठाऊँ।
जठरअगिनइकरसजहँ लागी। अधिकतपै जहँ पतितअभागी
खट्टा मीठा माता खावै। लागि छुरी सी बहु दुख पावै
आप दुखी माता दुख पाया। दसैं महीने जग मैं आया॥
जग जंजाल देख कर रोया। नर नारी मिलि सभी बिगोया
माय मोह पवन लगि भूला। सहजो गोद पालने झूला॥
नाते सभी लगे उठि झूठे। पड़ा बन्ध मे कैसे छूटे॥६८॥

॥ दोहा ॥

सब नाते उठि उठि लगे, रोम रोम लिया बन्ध॥
सहजो यह भी रलि मिला, फिर फिर भूला अन्ध॥६९॥

॥ चौपाई ॥

कोई कहै मैं इस की माई। कोई कहै लाला की दाई॥
कोई कहै यह सुन्दर हीरा। गोदखेलाऊँ अपना बीरा॥
कोई कहै मैं या का बापू। बालक पाया पुन्न प्रतापू॥
कोई कहै मैं या की बूवा। चाचा कहै भतीजा हूवा॥

---

* मूत्र या पेशाब

कोई कहै यह मेरा भाई। कोई कहै मैं दादी आई ॥
कोई कहै मैं मा की बहिनी। कोई कहै मैं या की नानी ॥
कोई कहै मैं इसका मामा। लाया खाँड़ खडूले जामा ॥
कोई कहै मैं या का नाना। मामी ने भाँजा करि जाना ॥
कोई कहै यह पोता बाल। काई कहै यह मेरा लाल ॥७० ॥

॥ दोहा ॥

सब नाते लिये मान कर, घेरा घेरी घेर।
झूठे साँचे से लगैं, सुपने कंचन मेर* ॥ ७१ ॥
पित्र देवता गोतिया, गरह नछत्तर सौन†।
सहजो बन्धन बँधि गये, ताहि छुड़ावे कौन ॥ ७२ ॥

॥ चौपाई ॥

गूँगा घी कहना जब सीखा। सेढू नाम मदारी भीखा ॥
माय बाप ले नाम पुकारैं। जब किलकैत बसन मन वारैं ॥
मुख चूमैं और कंठ लगावैं। देवी देवा बहुत मनावैं ॥
रोग होय तो बहु दुख पावैं। ले ले जहाँ तहाँ पग धावैं ॥
कबहूँ झरि पिंजर है जावै। कबहूँ खाँसी बहुत सतावै ॥
चलै पेट कबहूँ बहु रोवै। खीजै बहुत नेक नहिं सोवै ॥
ज्वर कबहूँ दूखैं दोउ नैना। पुनः पुनः दुख लहै न चैना॥
निकसै दाँत दाढ़ दुख भैया। जब सूँ जनम सदा दुख पैया॥
॥ ७३

॥ दोहा ॥

दुक्ख सुक्ख बढ़ने लगा, पाँच बरस भइ देह।
जब पढ़ने बैठाइया, अपनी बिद्या लेह ॥७४॥

---

*पहाड़। † शायद "सरवन" से मतलब है जो बड़े भारी भक्त मा बाप के थे और उन को बँहगी पर लिए फिरते थे। इनका चित्र सावन में दीवार पर लिख कर लोग पूजते हैं।

॥ चौपाई ॥

बालक का चित खेल मँझारे । ज्यौं ज्यौं पाधा छड़ियन मा।
बैठि रहै तौ पकड़ बुलावै । बाँधि बाँधि दुख देत पढ़ावै
मन ही मन सोचै दुख भारी । दुर्जन भये बाप महतारी ॥
दुख दे दे कर बहुत पढ़ाया । खोट कपट में घना सँधाया
ऐसे भया बरस द्वादस का । रहा नहीं उनहूँ के बस का
मन में आवै सो पुनि करई । मात पिता सूँ नेक न डरई॥
खेले खेल बहुत परकारा । सबही बिधि लड़कापन हार
बालपना हँस खेल गँवाया । गुरु की टहल सरन नहिं आय
पाप पुन्न कूँ ना पहिचाना । सहजो कर्ता राम न जाना७

॥ दोहा ॥

तरुनापा फिर आइया, पाँच भूत ले संग ।
जोबन मद माती रहै, पियै बिषय को रंग ७६॥

॥ चौपाई ॥

तरुनापा भया सकल सरीरा । अंधा भया बिसरि हरि हीरा
बिषय बासना के मद माते । अहं आपदा के रंग राते॥
मूँछ मरोड़ अकड़ता डोलै । काहू तैं मुख मीठ न बोलै॥
कहै बराबर मेरे नाहीं । बुद्धिमान कोइ या जग माहीं
मैं बलवन्त सबन पर भारी । द्रब्य कमाऊँ नरन अगारी
महा दुखी सुख मान लियो है । मोह अमल अज्ञान पियो है ॥
भया कुटम्बी जब सुख कैसा । सहजो बन्ध* पड़ै कोइ जैसा॥
सुत पुत्री उपजै मरि जावै । सोच सोच तन मन दुख पावै
॥ ७७ ॥

*कै़दखा़ना ।

॥ दोहा ॥

द्रब्यहीन भटकत फिरै, ज्यौं सराय को स्वान।
झिड़कि दियो जेहि घर गया, सहजो रह्यो न मान ॥७८॥

॥ चौपाई ॥

द्रब्यहीन सब को मुख जोहै। जाति बरन देखैनहिं कोहै॥
निहुरिनिहुरिज्यौंबन्दरनाचै। राम तजोइन बातन राचै॥
बेटी ब्याह जोग घर माहीं। और भूखे सब कितसूँखाहीं॥
कहै हवेली एक बनाऊँ। अपने कुल मैं इज्जत पाऊँ॥
कलपै बहुत सीस धुनि माथा। सहजो दुखी कुटँबके साथा॥
आवै ना सतसंगीत माहीं। कुटँब जाल छुटकारा नाहीं॥
हरि को भक्ति नहीं लौ लाई। दारा सुत धन की गुमराई†॥
दुखधन्धाकरि जन्म गँवाया। सहज सहज बूढ़ापन आया
॥ ७९ ॥

वृद्ध अवस्थ

॥ दोहा ॥

सहजो धौले‡ आइया, झड़ने लागे दाँत।
तन गुंझल§ पड़ने लगी, सूखन लागी आँत ॥ ८० ॥

॥ चौपाई ॥

डबडबाय आँखन मैं पानी। बूढ़े तन को यही निसानी॥
नैनन मैं जल भरि भरि आवै। दाँत हिलैं दारुन दुख पावै॥
गोड़े थके दरद बाई का। कफखाँसीहियेदुख वाही का

---

†गुमराही, ‡अभिमान। ‡सफ़ेद बाल। §झुर्री

खों खों करै नींद नहिं आवै । आप जगै और लोग जगावै
बेबस इन्द्री सिथल भई हैं । अब क्या जीते सहज गई हैं ॥
पूत बहू लख नाक चढ़ावैं । बहुत पुकारै निकट न आवैं ॥
निहुरि चलै लकड़ी लै हाथा । स्वजन कुटँब नहिं दुख के साथ
असी बरस लग बीते साठी* । सहजो कहै बहक बुधि नाठी†
॥८१॥

॥ दोहा ॥

असी बरस ऊपर लगी, बिरध अवस्था होय ।
आगे की थिरता नहीं, पिछलि गइ सब खोय ॥८२॥
तीन अवस्था बीत कर, चौथी आई मन्द ।
वृद्ध अवस्था सिर चढ़ी, तहू न चेता अन्ध ॥८३॥

॥ चौपाई ॥

लागी बिरध अवस्था चौथी । सहजो आगे मौत हि मौती ॥
हाथ पैर सिर काँपन लागे । नैन भये बिनु जोति अभागे ॥
स्रवन तें कछु सुनियत नाहीं । दाँत डाढ़ नहिं मुख के माहीं ॥
कंठ रुके कफ बाई घेरे । हाड़ हाड़ सब दुख में पेरे ॥
बात कहै घर बाहर हाँसा । कुटँब दियो मिल पैरी‡ बासा ॥
मन चालै सब रस कूँ तरसै । नर नारी कोइ हितू न दरसै ।
आप आपकूँ इत उत डोलै । बिन पौरुष कोइ मुखहुँ न बोलै
जिन कारन पचिया दिनराती । बात करैं नहिं कुटुँब सँगाती ।
सुत पोते दुर्गंध घिनावैं । टहल करैं तब नाक चढ़ावैं ॥
तिन के मोह तजे जगदीसा । अब मन मैं कलपै धुनि सीसा ॥
चरनदास गुरु कही बिसेषी । हरि बिन यौं जग जाता देखी
॥ ८४ ॥

---

*सठिया गया । † जाती रही । ‡ द्वारे ।

॥ दोहा ॥

सेत रोम सब हो गये, सूख गई सब देह ।
सहजो वह मुख ना रहा, उड़ने लागी खेह ॥ ८५ ॥
सहजो इन्द्री सब थकी, तन पौरुष भये छीन ।
आसा तृसना ना घटी, सहज बचन भये दीन ॥८६॥
चार अवस्था खो दई, लियो न हरि को नाम ।
तन छूटे जम कूटि है, पापी जम के ग्राम ॥८७॥
आय जगत में क्या किया, तन पाला कै पेट ।
सहजो दिन धंधे गया, रैन गई सुख लेट ॥ ८८ ॥

मृत्यु दशा

॥ दोहा ॥

सहजो मृत्यू आइया, लेटा पाँव पसार ।
नैन फटे नाड़ी छुटो, सोँहो* रहा निहार ॥ ८९ ॥

॥ चौपाई ॥

पितसरकाबाई घिर आया । बाय सरक कफ ठौर बसाया ॥
कफ सरका गल रोका लिया है । कंठ रुके कोइ नाहिँ जिया है ॥
घुटरघुटर जब करने लागा । चेतनता सब तनका भागा ॥
नाते घिर घिर सब ही आये । थोथे अपने नेह जनाये ॥
आँखन सूँ जल भरि भरि लावैं । आपस मैं सब मोह दिखावैं ॥
हाय हाय कर कोई बोलै । कोई ढूँढ़त औषध डोलै ॥
कोई कहै कछु द्रव्य बतावो । धरा ढका कछु कर जदि खावो ॥
वाकूँ सुधि नाहिँ अपने तन की । जम किंकर मारत हैं घन की
॥९०॥

---

*सन्मुख, सामने ।

॥ दोहा ॥

जम की सूरत देख करि, सुधि बुद्धि गई नसाय।
सहजो जो संकट बन्यो, मुख सूँ कह्यो न जाय ॥९१॥
सहजो मिरतू के समय, पीड़ा होय अपार।
बीछू एक हजार ज्यों, डंक लगै इकसार ॥ ९२ ॥

॥ चौपाई ॥

कोई कहै भज राम हि रामा। सहजो कहै कौन अब कामा॥
आगू सूँ हरि सुमरे नाहीं। पचिपचिमुआ कुटुँब के माहीं॥
हिरदे रखता राम सँगाती। तौ रच्छा अब सब बनि आती
आगू सूँ अभ्यास जो रहता। तौ अब मुख सूँ हरि हरि कहता
तन की पीड़ा सब मिटि जाती। जम की तो पै कहा बसाती॥
राम राम मरते तू कहता। जो आगू सूँ कहता रहता॥
तैं मन दिया कुटुँब के साथा। हो बैठा घर बाहर नाथा॥
अपना किया भुगत रे जीया। जो गुर पूरा ढूँढ़ न कीया ९३

॥ दोहा ॥

पकरि बाँधि जम लै चले, धर्मराय के पास।
कई बार आगे गये, छप्पन जहाँ तिरास ॥ ९४ ॥
कई भाँति के दंड हैं, सहजो नाना त्रास।
नरक कुंड दुख भुगत करि, फिर चौरासी बास ॥ ९५ ॥

——○——

काल मृत्यु

॥ दोहा ॥

काल मृत्यु अब कहत हूँ, चौंक उठै अज्ञान।
समझैगा कोइ साध जन, कै कोइ बिद्यावान ॥ ९६ ॥

जगत बिषय की बासना, हरि सूँ नाहीं हेत।
काल मृत्यु कोई मरै, निरुचै होय परेत ॥ ९७ ॥
चार पहर का तेल भर, राखै दीवा बाल।
तेल निबड़ बाती बुझै, सहजो पूरा काल ॥ ९८ ॥
कै मानुष कै बायु सूँ, कै पतंग करि देय।
तेल रहै लोई बुझै, अकाल मृत्यु यों होय ॥९९॥

॥ चौपाई ॥

बूढ़ा बाला कै है तरुना। काल मृत्यु इक काल हि मरना १००

———o———

अकाल मृत्यु

॥ दोहा ॥

काल मौत जो आगे गाई। अकाल मृत्यु कहै सहजोबाई
सस्तर मौत मरै जो कोई। यह भी मौत अकालहि होई
बिगड़ै रोग पथ्य नहिं कीन्हो। यह भी मौत अकालहि चीन्हो
कोई भाँति जो बिष खा मरै। और जीवत पावक मैं जरै ॥
जल में डूबि जाय कोइ कैसे। लागै प्रेत मरै कोइ ऐसे ॥
साँप डसे छूटै जो काया। महलापतनी* तैं दबि जाया ॥
कोऊ ठग फाँसी दे मारै। जंगल पसू तोड़ जो डारै ॥
ये सब मृत्यु अकाल दिखाई। मुए सुँ योनि पिसाचार पाई
॥१०१॥

॥ दोहा ॥

प्रेत योनि कूँ पाय कै, दुखी भये अज्ञान।
आप दुखी दुख देत हैं, उठ गइ सब पहिचान ॥१०२॥

---

* मकान के गिरने से।

॥ चौपाई ॥

पेट बड़ा मुख सुई समाना । भूखप्यासमैं फिरै दिवाना ॥
भटकत फिरै ठौर नहिंपावै । लागत फिरै जूतियाँखावै ॥
बासा लहै कुचील ठिकाना । आप कुचील कु चीलहि बाना
पाप करै हरि कूँ बिसरावै । सहजो कहै सो यह गति पावै
॥१०३॥

॥ दोहा ॥

रही सो आयुर्दा कटै, मृत्यु लोक के माहिँ ।
जब ही पूरी हो चुकै, बाँधे नर्कहि जाहिँ ॥१०४॥
अति कुचील वह ठौर है, महा घोर भयमान ।
त्राहि त्राहि पापी करैं, सुनै न कानौं कान ॥१०५॥

॥ चौपाई ॥

बहुतक घोर नरक में पड़े । बहुतक थंभन बाँधे खड़े ॥
बहुतन के सिर आरे धरिये । बहुतकपापी गुरजौं* गढ़िये ।
बहुतौं का सिर नीचे किया । ऊपर बाँधि पाँव जो दिया ॥
तले कड़ाहे तेल जलाया । भर भर करछे छौंक लगाया॥
बहुतन पकरि कुंड मैं डारे । जिन सिर कागा चोँचन मारे
कहँ लग कहूँ त्रास बहुतेरे । छप्पन त्रास कहे गुरु मेरे ॥
जम पेरत हैं सकल मँझारी । सब ही भुगतैं नर कहा नारी॥
फिरि फिरि मूँड़ी जाय कुटावैं । सहजो कहै नहीं सकुचावैं१०६

॥ दोहा ॥

जम का लिंग सरीर है, पापी लिंग सरीर ।
जैसे कूँ तैसे गहै, वैसी वा कूँ पीर ॥१०७॥

---

*गदा ।

त्रास दहन जम के कहे, सुन भजियो नर नारि ।
अब चौरासी कहत हूँ, भिन्न भिन्न बिस्तार ॥१०८॥

॥ चौपाई ॥

नौलख जल के जीव बताये । बहुत जन्म इन में भुगताये॥
पंछी जाति कही दस लाखा । आगू सूँ चलि आई साखा ॥
ग्यारह लख कृमकीट लखाऊँ। जिमीं माहिं जो चलत दिखाऊँ
बीस लाख थावर बिस्तारा । भरमत भरमत हो पचि हारा॥
तीस लाख पसु जोनि सुनाया। घनी बार सो पहिरी काया॥
चारहु लाख मनुक्खा देही । लख चौरासी यह सुनि लेही
इक इक बार सबै तुम भये । कहिये कहा बहुत दुख सहे॥
दुख खे खेकरि यह तन पायौ। सहजो हरिगुरु बिना गँवायौ॥
चरनदास गुरु पूरे पाये । चौरासी जम दंड छुटाये १०९

—:o:—

नाम का अंग

॥ दोहा ॥

लख चौरासी यह कही, फेर फेर भुगतन्त ।
जन्म मरन छूटै नहीं, बिना सरन भगवन्त ॥ १ ॥
जज्ञ दान तीरथ करै, पूजा भाँति अनेक ।
मुक्ति न पावै सहजिया, बिना भक्ति हरि एक ॥ २ ॥
इन्द्र की पदवी मिलै, और ब्रह्म की आब ।
आगे तौ भी मरन है, सहजो सकल बहाव ॥ ३ ॥
राम नाम ले सहजिया, दीजै सर्ब अकोर* ।
तीन लोक के राज लौं, अन्त जाहुगे छोर† ॥ ४ ॥

---

* घूस, रिशवत—यहाँ मतलब न्यौछावर से है । † छोड़ ।

बिना भक्ति थोथे सभी, जोग जज्ञ आचार।
राम नाम हिरदे धरो, सहजो यही बिचार ॥ ५ ॥
यह अवसर दुर्लभ मिलै, अचरज मनुषा देह।
लाभ यही सहजो कहै, हरि सुमिरन करि लेह ॥ ६ ॥
एक घड़ी का मोल ना, दिन का कहा बखान।
सहजो ताहि न खोइये, बिना भजन भगवान ॥७॥
पारस नाम अमोल है, धनवन्ते घर होय।
परख नहीं कंगाल कूँ, सहजो डारै खोय ॥ ८ ॥
सहजो जा घट नाम है, सो घट मंगल रूप।
राम बिना धिक्कार है, सुन्दर धनवंत भूप ॥ ९ ॥
सहजो नौका नाम है, चढ़ि के उतरौ पार।
राम सुमिरि जान्यो नहीं, ते डूबे मँझधार ॥ १० ॥
सहजो भवसागर बहै, तिमिर बरस घन घोर।
ता मैं नाम जहाज है, पार उतारै तोर ॥ ११ ॥
पावक नाम जलाइ है, पाप ताप दुख दुन्द।
राम सुमिर सहजो कहै, जो बिसरै सो अन्ध ॥ १२ ॥
कनक दान गज दान दे, उनन्चास भू दान।
निस्चै करि सहजो कहै, ना हरि नाम समान ॥ १३ ॥
मैंह सहै सहजो कहै, सहै सीत और घाम।
पर्बत बैठो तप करै, तौ भी अधिको नाम ॥ १४ ॥
चरनदास हरि नाम की, महिमा कही अपार।
सो सहजो हिरदे धरी, अचल धारना धार ॥ १५ ॥
सहजो सुमिरन कीजिये, हिरदे माहिँ दुराय*।
होठ होठ सूँ ना हिलै, सकै नहीं कोइ पाय ॥ १६ ॥

---

* छिपाकर, गुप्त।

राम नाम यौं लीजिये, जानै सुमिरन हार।
सहजो कै कर्तार ही, जानै ना संसार ॥ १७ ॥
बैठे लेटे चालते, खान पान व्यौहार।
जहाँ तहाँ सुमिरन करै, सहजो हिये निहार ॥ १८ ॥
जागत में सुमिरन करै, सोवत में लौ लाय।
सहजो इकरस ही रहै, तार टूटि नहिं जाय ॥ १९ ॥
आठ पहर सुमिरन करै, बिसरै ना छिन एक।
अष्टादस और चार में, सहजो यही बिसेष ॥ २० ॥
सहजो सुमिरन सब करैं, सुमिरन माहिं बिबेक।
सुमिरन कोई जानि है, कोटौं मद्धे एक ॥ २१ ॥
जन्म मरन बन्धन कटै, टूटै जम की फाँस।
राम नाम ले सहजिया, होय नहीं जग हाँस ॥ २२ ॥
चौरासी के दुख कटैं, छप्पन नर्क तिरास।
राम नाम ले सहजिया, जम पुर मिलै न बास ॥ २३ ॥
गर्भ बास संकट मिटै, जठर अगिन की आँच।
राम नाम ले सहजिया, मुख सूँ बोलो साँच ॥ २४ ॥
सील छिमा संतोष गहि, पाँचो इन्द्री जीत।
राम नाम ले सहजिया, मुक्ति होन की रीति ॥ २५ ॥
काम क्रोध लोभ मोह मद, तजि भज हरि को नाम।
निस्चै सहजो मुक्ति है, लहै अमरपुर धाम ॥ २६ ॥
काम क्रोध मोह लोभ तन, ले सुमिरै हरि नाम।
मुक्ति न पावै सहजिया, ना रीझैंगे राम ॥ २७ ॥
कामी मति भिष्टल* सदा, चलै चाल बिपरीत
सील नहीं सहजो कहै, नैनन माहिं अनीत ॥

---

* भ्रष्ट, गंदी।

सदा रहै चित भंग ही, हिरदे थिरता नाहिँ ।
राम नाम के फल जिते, काम लहर बहि जाहिँ ॥२९॥
सहजो क्रोधी अति बुरो, उलटी समझै बात ।
सबही सूँ ऐंठो रहै, करै बचन की घात ॥ ३० ॥
कूकर ज्यौँ भूसत फिरै, तामस मिलवाँ बोल ।
घर बाहर दुख रूप है, बुधि रहै डाँवा डोल ॥ ३१ ॥
मन मैला तन छीन है, हरि सूँ लगै न नेह ।
दुखी रहै सहजो कहै, मोह बसै जा देह ॥ ३२ ॥
मोह मिरग काया बसै, कैसे उबरै खेत ।
जो बोवै सोई चरै, लगै न हरि सूँ हेत ॥ ३३ ॥
नीच लोभ जा घट बसै, झूठ कपट सूँ काम ।
बौरायो चहुँ दिसि फिरै, सहजो कारन दाम ॥ ३४ ॥
द्रव्य हेत हरि कूँ भजै, धनही की परतीत ।
स्वारथ ले सब सूँ मिलै, अन्तर की नहिँ प्रीत ॥ ३५॥
अभिमानी मुख धूर है, चहै बड़ाई आप ।
डिंभ लिये फूलो फिरै, करतो डरै न पाप ॥ ३६ ॥
प्रभुताई कूँ चहत है, प्रभु को चहै न कोइ ।
अभिमानी घट नीच है, सहजो ऊँच न होय ॥ ३७ ॥

नन्हा महा उत्तम का अंग

॥ दोहा ॥

धन छोटापन सुख महा, धिरग बड़ाई ख्वार* ।
सहजो नन्हा हूजिये, गुरु के बचन सम्हार ॥ १ ॥
सहजो तारे सब सुखी, गहैँ† चन्द और सूर ।
साधू चाहै दीनता, चहै बड़ाई कूर‡ ॥ २ ॥

---

*ख़राब । †ग्रहन लगता है । ‡दुष्ट ।

अभिमानी नाहर बड़ो, भरमत फिरत उजाड़।
सहजो नन्ही बाकरी, प्यार करै सन्सार ॥ ३ ॥
सीस कान मुख नासिका, ऊँचे ऊँचे नाँव।
सहजो नीचे कारने, सब कोउ पूजै पाँव ॥४॥
नन्ही चींटी भवन मैं, जहाँ तहाँ रस लेह।
सहजो कुंजर अति बड़ो, सिर मैं डारै खेह ॥ ५ ॥
सहजो चन्दा दूज का, दरस करै सब कोय।
नन्हे सूँ दिन दिन बढ़ै, अधिको चाँदन होय ॥ ६ ॥
बड़ा भये आदर नहीं, सहजो आँखिन देख।
कला सभी घट जायगी, कछू न रहसी रेख ॥ ७ ॥
सहजो नन्हा बालका, महल भूप के जाय।
नारी परदा ना करै, गोदहि गोद खेलाय ॥ ८ ॥
बड़ा न जाने पाइहै, साहेब के दरबार।
द्वारे ही सूँ लागि है, सहजो मोटी मार ॥ ९ ॥
बारे दीवे चाँदना, बड़ा भये अँधियार *।
सहजो त्रृन हलका तिरै, डूबै पत्थर भार ॥ १० ॥
भलो गरीबी नवनता, सकै नहीं कोइ मार।
सहजो रुई कपास की, काटै ना तरवार ॥ ११ ॥
चरनदास सतगुरु कही, सहजो कूँ यह चाल।
सको तो छोटा हूजिये, छूटै सब जंजाल ॥ १२ ॥
साहन कूँ तो भय घना, सहजो निर्भय रंक।
कुंजर के पग बेड़ियाँ, चींटी फिरै निसंक ॥ १३ ॥
ऊँचे उज्जल भाग सूँ, आय मिले गुरुदेव।
प्रेम दिया नन्हा किया, पूरन पायो भेव ॥ १४ ॥

---

* दीवा या रोशनी "बढ़ा" देना मुहावरे में चिराग़ बुझा देने को कहते हैं—इस साखी का अर्थ यह है कि नन्हा सा दीवा जब बाला गया तो चाँदना करता है और जब "बढ़ाया" (बुझाया) गया तो अँधेरा हो जाता है।

सहजो पूरन भाग सूँ, पाय लिये सुखदान ।
नख सिख आई दीनता, भजे बड़ाई मान ॥ १५ ॥
सहजो पूरन भाग सूँ, पाय लिये सुखदैन ।
गये कुलच्छन देह सूँ, सुलच्छन पायो चैन ॥ १६ ॥
औगुन थे सो सब गये, राज करैं उनतीस* ।
प्रेम झिला प्रीतम मिला, सहजो वारा सीस ॥१७॥

—o—

प्रेम का अंग

चरनदास सतगुरु दियो, प्रेम पिलाया छान ।
सहजो मतवारे भये, तुरिया तत गलतान ॥ १ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, मन भयो चकनाचूर ।
छके रहैं घूमत रहैं, सहजो देख हजूर ॥ २ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, प्रीतम के रँग माहिँ ।
सहजो सुधि बुधि सब गई, तन की सोधी नाहिँ ॥ ३ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, पलटि गयो सब रूप ।
सहजो दृष्टि न आवई, कहा रंक कहा भूप ॥ ४ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, कहैं बहकते बैन ।
सहजो मुख हाँसी छुटै, कबहू टपकै नैन ॥ ५ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, जाति बरन गइ छूट ।
सहजो जग बौरा कहै, लोग गये सब फूट ॥ ६ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, नेम धरम गयो खोय ।
सहजो नर नारी हँसैं, वा मन आनँद होय ॥ ७ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, सहजो डिगमिग देह† ।
पाँव पड़ै कितकै किती, हरि सम्हाल जब लेह ॥८॥

* मन और ३ गुण और २५ प्रकृतियाँ । † शरीर ।

कबहूँ हकधक हो रहै, उठै प्रेम हित गाय।
सहजो आँख मुँदी रहै, कबहूँ सुधि हो जाय ॥ ९ ॥
मन में तो आनद रहै, तन बौरा सब अंग।
ना काहू के संग है, सहजो ना कोइ संग ॥ १० ॥
प्रेम लटक दुर्लभ महा, पावै गुरु के ध्यान।
अजपा सुमिरन कहत हूँ, उपजै केवल ज्ञान ॥ ११ ॥

अजपा गायत्री का अंग

ऐसा सुमिरन कीजिये, सहज रहै लौ लाय।
बिनु जिभ्या बिन तालुवै, अन्तर सुरत लगाय ॥ १ ॥
हन्सा सोहं तार कर, सुरति मकरिया पोय।
उतर उतर फिरि फिरि चढ़ै, सहजो सुमिरन होय ॥ २ ॥
बरत† बाँध कर धरन में, कला गगन में खाय।
अर्ध उर्ध नट ज्यौं फिरै, सहजो राम रिझाय ॥ ३ ॥
लगै सुन्न में टकटकी, आसन पदम लगाय।
नाभि नासिका माहिँ करि, सहजो रहै समाय ॥ ४ ॥
सहज स्वाँस तीरथ बहै, सहजो जो कोइ न्हाय।
पाप पुन्न दोनौं छुटैं, हरि पद पहुँचै जाय ॥ ५ ॥
हक्कारे* उठि नाम सूँ, सक्कारे होय लीन।
सहजो अजपा जाप यह, चरनदास कहि दीन ॥ ६ ॥
सब घट अजपा जाप है, हन्सा सोहं पुर्ष।
सुरत हिये ठहराय के, सहजो या बिधि निर्ख ॥ ७ ॥
सब घट ब्यापक राम है, देही नाना भेष।
राव रंक चंडाल घर, सहजो दीपक एक ॥ ८ ॥

---

* रस्सी। † पुकारै।

सत्त बैराग जगत मिथ्या का अंग

॥ दोहा ॥

आतम में जागत नहीं, सुपने सोवत लोग।
सहजो सुपने होत हैं, रोग भोग और जोग ॥ १ ॥
कोटि बरस इक छिन लगै, ज्ञान दृष्टि जो होय ॥
बिसरि जगत औरै बनै, सहजो सुपने सोय ॥ २ ॥
ऐसे ही सब स्वप्न है, स्वर्ग मितु पाताल।
तीन लोक छल रूप है, सहजो इन्दरजाल ॥ ३ ॥
अज्ञानी जानत नहीं, लिप्त भया करि भोग।
ज्ञानी तो दृष्टा भये, सहजो खुसी न सोग ॥ ४ ॥
मन माहीं बैराग है, ब्रह्म माहिं गलतान।
सहजो जगत अनित्य है, आतम कूँ नित जान ॥ ५ ॥
सहजो सुपने एक पल, बीते बरस पचास।
आँख खुलै जब झूठ है, ऐसे ही घर बास ॥ ६ ॥
मृग तृस्ना जल साँच है, जब लग निकट न जाय।
सहजो तब लग जग बन्यौ, सतगुरु दृष्टि न पाय ॥ ७ ॥
जैसे बालक जल बिषे, देखि देखि डरपाय।
समझ भई जग भर्म था, सहजो रहै खिसाय ॥ ८ ॥
ज्ञानी को जग झूठ है, अज्ञानी कूँ साँच।
कोटि लाल कागद लिखे, सहजो बैठा बाँच ॥ ९ ॥
जगत तरैयाँ भोर की, सहजो ठहरत नाहिं।
जैसे मोती ओस की, पानी अँजुली माँहि ॥ १० ॥
धूवाँ को सो गढ़ बन्यो, मन में राज सँजोय।
झाँईं माईं सहजिया, कबहूँ साँच न होय ॥ ११ ॥
ऐसे ही जग झूठ है, आतम कूँ नित जात।
कहजो काल न खा सकै, ऐसो रूप पिछान ॥ १२ ॥

सच्चिदानन्द का अंग

॥ दोहा ॥

नया पुराना होय ना, घुन नहिँ लागै जासु।
सहजो मारा ना मरै, भय नहिँ ब्यापै तासु ॥ १ ॥
किरै* घटै छीजै नहीं, ताहि न भिजवै नीर।
ना काहू के आसरे, न काहू के सीर ॥ २ ॥
रूप बरन वा के नहीं, सहजो रंग न देह।
मीत इष्ट वा के नहीं, जाति पाँति नहिँ गेह ॥ ३ ॥
सहजो उपजै ना मरै, सदबासी नहिँ होय।
रात दिवस ता में नहीं, सीत ऊस्न नहिँ सोय ॥ ४ ॥
आग जलाय सकै नहीं, सस्तर सकै न काटि।
धूप सुखाय सकै नहीं, पवन सकै नहिँ आटि† ॥ ५ ॥
मात पिता वा के नहीं, नहीं कुटुँब को साज।
सहजो वाहि न रंकता, ना काहू को राज ॥ ६ ॥
आदि अंत ता के नहीं, मध्य नहीं तेहि माहिँ।
वार पार नहिँ सहजिया, लघू दीर्घ भी नाहिँ ॥ ७ ॥
परलय में आवै नहीं, उत्पति होय न फेर।
ब्रह्म अनादी सहजिया, घने हिराने हेर ॥ ८ ॥
जाके किरिया करम ना, षट दर्सन को भेस।
गुन औगुन ना सहजिया, ऐसो पुरुष अलेस ॥ ९ ॥
रूप नाम गुन सूँ रहित, पाँच तत्त सूँ दूर।
चरनदास गुरु ने कही, सहजो छिपा हजूर ॥ १० ॥
आपा खोये पाइये, और जतन नहिँ कोय।
नीर छीर निर्ताय के, सहजो सुरति समोय ॥ ११ ॥

---

* कीड़ा लगै। † उड़ाना, हटाना।

नित्य अनित्य सांख्य मत का अंग

भिन्न भिन्न दोनोँ करै, वही सांख्य मति भेद।
जीवन और बिदेह सूँ, मुक्ति पाय तजि खेद ॥१॥
जाग्रत और सुषोपती, स्वप्न अवस्था तीन।
काया ही सूँ होत है, घटै बढ़ै ह्वै छीन ॥ २ ॥
तुरिया इकरस आतमा, इन तेँ परे निहार।
इन्द्री मन गहि ना सकै, सहजो तत्त अपार ॥ ३ ॥
जिभ्या चाखि सकै नहीँ, स्रवन सुनै नाहिँ ताहि।
नैन बिलोकि सकै नहीँ, नासा तुचा न पाय ॥ ४ ॥
अनुभव ही सूँ जानिये, चित बुधि थकि थकि जाहिँ।
तीन भाँति हंकार की, सो भी पावै नाहिँ ॥ ५ ॥
जाके रस नहिँ रूप नहिँ, गन्ध नहीँ वा ठौर।
सब्द नहीँ अस्पर्स नहीँ, सहजो वह कछु और ॥ ६ ॥
गुन तीनोँ सूँ है परे, ता मेँ रूप न रेख।
बोध रूप हो सहजिया, ब्रह्म दृष्टि करि देख ॥ ७ ॥

निर्गुन सर्गुन संशय निवारन भक्ति का अंग

॥ दोहा ॥

निराकार आकार सब, निर्गुन और गुनवन्त।
है नाहीँ सूँ रहित है, सहजो योँ भगवन्त ॥ १ ॥
नाम नहीँ औ नाम सब, रूप नहीँ सब रूप।
सहजो सब कछु ब्रह्म है, हरि परगट हरि गूप ॥ २ ॥
कहा कहूँ कहा कहि सकूँ, अचरज अलख अभेव।
सुने अचंभो सोँ लगै, सहजो ब्रह्म अलेव* ॥ ३ ॥

---

* पवित्र।

वही आप परगट भये, ईसुर लीला धार।
माँहि अजुध्या और बृज, कौतुक किये अपार ॥ ४ ॥
चार बीस अवतार धरि, जन की करी सहाय।
राम कृश्न पूरन भये, महिमा कही न जाय ॥ ५ ॥
भक्त हेत हरि आइया, पिरथी भार उतारि।
साधन की रच्छा करी, पापी डारे मारि ॥ ६ ॥
निर्गुन सूँ सर्गुन भये, भक्त उधारनहार।
सहजो की दंडौत है, ता कूँ बारम्बार ॥ ७ ॥
ता के रूप अनन्त हैं, जा के नाम अनेक।
ता के कौतुक बहुत हैं, सहजो नाना भेष ॥ ८ ॥
गीता में श्रीकृश्न ने, बचन कहे सब खोल।
सब जीवन में मैं बसूँ, कै चर कहा अडोल ॥ ९ ॥
मैं अखंड ब्यापक सकल, सहज रहा भर पूर।
ज्ञानी पावै निकट हीं, मूरख जानै दूर ॥ १० ॥
जोगी पावै जोग सूँ, ज्ञानी लहै बिचार ॥
सहजो पावै भक्ति सूँ, जा के प्रेम अधार ॥ ११ ॥
धन्य जसोदा नन्द धन, धन बृजमंडल देस।
आदि निरंजन सहजिया, भयो ग्वाल के भेष ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥

नेत नेत कहि बेद पुकारै। सो अधरन पर मुरली धारै ॥
जाकूँ ब्रह्मादिक मुनि ध्यावै। ताहि पूत कहि नन्द बुलावै ॥
सिव सनकादिक अन्त न पावै। सो सखियन सँग रास रचावै ॥
संजम साधन ध्यान न आवै। सो ग्वालन सँग खेल मचावै ॥
अनन्त लोक मेटै उपजावै। सो मोहन बृजराज कहावै ॥
निर्बिकार निर्भय निर्बाना। कारन भक्त धरे तन नाना ॥

निर्गुन सर्गुन भेद न दोई । आदि अन्त मध एकहि होई॥
गूँगे को सुपनो यह बाता । सहजो कहै कौन के साथा॥१३॥

॥ दोहा ॥

निर्गुन सर्गुन एक प्रभु, देख्यौ समझ बिचार ।
सतगुरु ने आँखी दई, निस्चै कियौ निहार ॥ १४ ॥
सहजो हरि बहु रंग है, वही प्रगट वहि गूप ।
जल पाले में भेद ना, ज्यौं सूरज अरु धूप ॥१५॥
चरनदास गुरु की दया, गयो सकल सन्देह ।
छूटे बाद बिबाद सब, भई सहज गति लेह ॥ १६ ॥
गुरु बिन मारग ना चलै, गुरु बिन लहै न ज्ञान ।
गुरु बिन सहजो धुंध है, गुरु बिन पूरी हान ॥ १७ ॥
सतगुरु बिन भटकत फिरै, परसत पाथर नीर ।
सहजो कैसे मिटत है, जम जालिम की पीर ॥१८॥
पूजै नौग्रह देवता, पित्तर सती अकूत*।
सहजो कैसे सुलझिहै, है रहो सूत कसूत ॥ १९ ॥
गुरु कूँ जानत है नहीं, बनिता सुत के मोह ।
साधन की निन्दा करै, हरि सूँ राखै द्रोह ॥ २० ॥
अनन्य भक्ति उपजै नहीं, गुरु सूँ नाहीं सीर † ।
सहजो मिलै न सिन्ध कूँ, ज्यौं तलाव को नीर ॥ २१ ॥
जनक बिदेही परम गुरु, दादा गुरु सुकदेव ।
सहजो की डन्डौत है, चरनदास गुरु भेव ॥ २२ ॥

॥ अड़ियल ॥

हरिप्रसाद की सुता, नाम है सहजो बाई ।
दूसर कुल में जन्म, सदा गुरु चरन सहाई ॥ २३ ॥

---

* अनंत । † निज की खेती ।

चरनदास गुरुदेव , भेव मोहिँ अगम बतायौ ॥
जोग जुगत सूँ दुलभ , सुलभ करि दृष्टि दिखायौ ॥२४॥

॥ दोहा ॥

और साधन परनाम करि, कर जोड़ूँ सिर नाय ।
यही दान मोहिँ दीजिये , भक्ति करूँ चित लाय ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

फाग महीना अष्टमी , सुकल पाख बुधवार ।
संबत अठारे सैं हुते , सहजो किया बिचार ॥
गुरु अस्तुति के करन कूँ , बाढ़यौ अधिक हुलास ।
होते होते होगई , पोथो सहज प्रकास ॥
दिल्ली सहर सुहावना , परीछितपुर में बास ।
तहाँ समापत ही भई , नवका सहज प्रकास ॥
सहज प्रकास पोथी कही , चरनदास परताप ।
पढ़ै सुनै की प्रीति सूँ , भाजे सबही पाप ॥

सोलह तिथि निर्नय

परनाम करूँ सुकदेव जी , तुम पर वारूँ प्रान ।
सोलह तिथि अब कहत हूँ , इनका दीजै ज्ञान ॥
चरनदास के चरन कूँ , निस दिन राखूँ ध्यान ।
ज्ञान भक्ति और जोग कूँ , तिथि में करूँ बखान ॥

॥ कुंडलिया ॥

मावस

ममा ररा दो अंक कूँ राखै हिरदे माहिँ ।
धर्मराय जाँचै नहीं लेखा माँगै नाहिँ ॥
लेखा माँगै नाहिँ जाय नहिँ जमपुर बंधा ।
ऐसे निर्मल नाम को बिसरै सो अंधा ।

टीका चारो बेद का महिमा कही न जाय।
औसर बीत्यौ जात है सहजो सुमिर अघाय॥

पड़िवा

पानी का सा बुलबुला यह तन ऐसा होय।
पीव मिलन की ठानिये रहिये ना पड़ि सोय॥
रहिये ना पड़ि सोय बहुर नहिं मनुखा देही।
आपन ही कूं खोज मिलै जब राम सनेही॥
हरि कूँ भूले जो फिरैं सहजो जीवन छार।
सुखिया जब ही होयगो सुमिरैगो करतार॥

दूज

दोयज धंधा जगत का लागि रहै दिन रैन।
कुटुँब महा दुख देत है कैसे पावै चैन॥
कैसे पावै चैन बिना साधू की संगत।
दुनिया रंग पतंग मजीठी गुरु को रंगत॥
जन्म मरन ता सूँ छुटै सहजो दरसै राम।
चौरासी के दुख मिटैं पावै निज पुर धाम॥

तीज

तीज तनिक सुख कारने बहुत फसाये जीव।
लालच लगि ऐसो गिरै जैसे मक्खी घीव॥
जैसे मक्खी घीव डूब करि निकसै नाहीं।
ऐसे यह नर बूड़ि रहै कुनबे के माहीं॥
मनुखा देही पाय के सहजो डारी खोय।
जमपुर बाँधे वे चले चौरासी दुख होय॥

चौथ

चौथ चहूँ दिस तिमिर है महा घोर भयमान।
मूरख जन सोवत तहाँ मिथ्या ते अज्ञान।

मिथ्या ते अज्ञान सत्य कूँ जानत नाहीं ।
बन बन ढूँढ़त फिरत राम अपने ही माहीं ॥
ज्यों मिँहदी मेँ रंग है लकड़ी मध्य हु तास ।
सहजो काया खोजि ले काहे रहत उदास ॥

पाँचै

पाँचो इन्द्री बस करौ मन जीतन की ठान ।
पवन रोक अनहद लगौ पावौ पद निर्बान ॥
पावौ पद निर्बान करौ तुम ऐसी करनी ।
आसन संजम साध बन्ध लागै जब धरनी ॥
चित मन बुधि हंकार कूँ करौ इकट्ठे आन ।
सहजो निज मन होय जब निस्चल लागै ध्यान ॥

छह

छहूँ कँवल कूँ देख करि सतवैं मेँ घर छाव ।
रसना उलटि लगाय करि जब आगे कूँ धाव ॥
जब आगे कूँ धाव देख करि जगमग जोती ।
बिन दामिनि चमकार सीप बिन उपजै मोती ॥
हन्स हन्स जहँ होत है ओअं ओअं होय ।
चरनदास यों कहत हैं सहजो सुरति समोय ॥

सातैं

सतसंगति ही कीजिये सत ही कथिये ज्ञान ।
सत ही मुख सूँ बोलिये सत ही कीजै ध्यान ॥
सत ही कीजै ध्यान हद्द तजि बेहद लागौ ।
तीन अवस्था छोड़ि जाय तुरिया सूँ पागौ ॥

निराकार निर्गुन तहाँ इकरस चेतन रूप ।
रात दिना सहजो नहीं नहीं छाँह नहिं धूप ॥

आठैं

आठन कूँ जानै नहीं दस कूँ नाहीं भेद ।
चौबीसो समझै नहीं कैसे छूटै खेद ॥
कैसे छूटै खेद पंच कूँ जीतै नाहीं ।
और पचीसौं संग रहै उनके ही माहीं ॥
दोय सदा लागी रहै चौरासी के फेर ।
चरनदास योँ कहत हैं सहजो आपा हेर ॥

नौमी

निन्दा हिन्सा त्याग करि तामस कूँ दे पीठ ।
चित कूँ अस्थिर कीजिये नासा आगे दीठ ॥
नासा आगे दीठ जहाँ कछु देखै भाई ।
पाँच तत्त दरसायँ और अचरज दरसाई ॥
तिरदेवा और आठ सिधि देखै इन्दर भूप ।
चरनदास कहैं सहजिया साधन अधिक अनूप ॥

दसमी

दसो दिसा भर पूर है ता में ये सब पिंड ।
ज्योँ सरवर में बुदबुदे ब्रह्म बीच ब्रह्मंड ॥
ब्रह्म बीच ब्रह्मंड तासु को वार न पारा ।
ऐसो तत्त अगाध नेत कहि निगम पुकारा ॥
चरनदास कहैं सहजिया गुरु से लेवै ज्ञान ।
नैना होहिं अनन्त ही जब यह पावै जान ॥

---

* चाँद ।

एकादसी

ग्यारस गति जो चहत हौ तजौ जगत की आस ।
कलह कलपना छाँड़ि के आतम मैं करि बास ॥
आतम में करि बास खैंच इन्द्री दस लावै ।
मन इस्थिर जब होय सुरति और निरति मिलावै ॥
ध्याता थाके ध्यान में ध्यान ध्येय के माहिँ ।
जनम मरन मिटि सहजिया उपजै बिनसै नाहिँ ॥

द्वादसी

द्वादस दावा दूर करि दावे ही में दुक्ख ।
राग दोष और आपदा अकस निबारै सुक्ख ॥
अकस निबारै सुक्ख मोहिँ चरनदास दुहाई ।
तामस सब ही त्याग तासु में बहुत भलाई ।
काम क्रोध मद लोभ कूँ ज्ञान अगिन सूँ जार ।
जब निर्मल हूै सहजिया आनँद लहै अपार ॥

तेरस

तेरस तन अचरज महा छिनभंगी छल रूप ।
देखत ही देखत गये कहा रंक कहा भूप ॥
कहा रंक कहा भूप कोई रहने नहिँ पावै ।
इत सूँ सब ही जाहि बहुरि उत सूँ नहिँ आवै ॥
इतने ऊपर घर करै महल दरब सन्मान ।
हाँसी आवै सहजिया ये मूरख मस्तान ॥

चौदस

चौरासी भुगती घनी बहुत सही जम मार ।
भरम फिरे तिहु लोक में तहू न मानी हार ॥

तहू न मानी हार मुक्ति की चाह न कीन्हो ।
हीरा देही पाय मोल माटी के दीन्हो ।
मूरख नर समझै नहीं समझाया बहु बार ।
चरनदास कहैं सहजिया सुमिरै ना करतार ॥

पूनो

पूनो पूरा गुरु मिलै मेटै सब सन्देह ।
सोवत सूँ चेतन्न होय देखै जाग्रत गेह ॥
देखै जाग्रत गेह जहाँ सूँ सुपने आयो ।
जग कूँ जान्यौ साँच रूप अपनो बिसरायो ॥
चरनदास कहैं सहजिया गुरु चरनन चित लाव ।
तिमिर मिटै अज्ञान कूँ ज्ञान चाँदनो पाव ॥

॥ दोहा ॥

सोलह तिथि पूरन भई, सहजो करी बखान ।
चरनदास की दया सूँ, मिटो सकल अज्ञान ॥
लिखै पढ़ै सुनै प्रीत सूँ, ताको पाप नसाहि ।
और ऐसी करनी करै, मुक्ति रूप ह्वै जाहि ॥

॥ सात वार निर्णय ॥

॥ दोहा ॥

नमो नमो सुकदेव जी, तुम्हरी सरन गही।
मेरे सिर पर हाथ धरि, चरनौं लागि रही ॥
सात वार बरनन करूँ, कुँडली माहिं उचार।
याही मुख सूँ कहत हूँ, तुम कूँ हिरदे धारि ॥

॥ कुंडलिया ॥

(१)

मंगल माली राम है, जाका यह जग बाग।
निस दिन ताही में रहै, वा ही सेती लाग ॥
वा ही सेती लाग, करी जिन यह गुलजारी।
पात पात की खबर, डाल सब लागै प्यारी ॥
आपन ही कूँ जानि लै, वाही ठौर का फूल।
चरनदास कहै सहजिया, ऐसे समझो कूल ॥

(२)

बुध बारी में फल घने, जो पै देवै बाड़।
रखवारी के बिन किये, पाँचौ करै उजाड़।
पाँचौ करै उजाड़, पचीसौ चरि चरि जाई।
सावधान जो होय, सोई वा के फल खाई ॥
चरनदास कहै सहजिया, ऐसे समुझ बिचार।
तेरी काया में खिलै, भाँति भाँति गुलजार ॥

(३)

बृहस्पति वारी आइया, पाई मनुषा देह।
सो तन छिन छिन घटत है, भयौ जात है खेह॥
भयौ जात है खेह, बहुरि लाहा कब लैहौ।
बेगहिं समुझ सँभार, नहीं बहुते पछितैहौ॥
आगा पीछा क्या करै, सकल बासना त्याग।
चरनदास कहै सहजिया, हरि सुमिरन कूँ लाग॥

(४)

सुक्कर सर* उपदेस का, लगा कलेजे नाहिँ।
ते नर पसू समान हैं, या दुनियाँ के माहिँ॥
या दुनियाँ के माँहि, सदा चक्कर में डोलैं।
आवा गौन दुख महा, तासु की गाँठि न खोलैं॥
ऐसे मूरख बावरे, भौंदू मुग्धा† गँवार।
चरनदास कहै सहजिया, भरमैं बारंबार॥

(५)

थावर‡ थिर करतार है, और सकल मिटि जाय।
जा तें सूमति प्रीति करि, रहते चित्त लगाय॥
रहते चित्त लगाय, तासु ने जग उपजाया।
वा की सरनै आय, करै बहु बिधि की छाया॥
ऐसा हरि का नाम है, जनम मरन मिटि जाय।
चरनदास कहै सहजिया, साचे सूँ लौ लाय॥

(६)

एत§ जो आये जगत मैं, हरि सुमिरन के काज।
ह्याँ कुछ कीया और ही, नेक न आई लाज॥

---

* बान, तीर। † मूर्ख। ‡ अडोल। § इत, यहाँ।

नेक न आई लाज, साज सब खोटे कीन्हे ॥
सदा रहे अज्ञान, राम घट में नहिं चीन्हे ॥
जैहौ जनम गँवाय के, पछितावा रहि जाय।
चरनदास कहै सहजिया, कहा कियौ तन पाय ॥

(७)

सोम सिरीपति* सेइये, गुरु की आयस† लेय।
सतसंगति अचरज कथा, ताही में मन देय ॥
ताही में मन देय, और ऊँचा नहिं या तैं।
और सकल धर्म उरै‡, सभी थोथी हैं बातैं ॥
चरनदास कहै सहजिया, भक्ति सिरोमनि जान।
तन धन चित बुध प्रान कूँ, ना में दीजै आन ॥

॥ दोहा ॥

सात वार ये मैं कहे, जा मैं हरि का भेद।
जो कोइ समुझै प्रीति सूँ, छूटै सबही खेद ॥
साता वारों बीच मैं, जग उपजै मिटि जाय।
सहजो बाई हरि जपौ, आवागवन नसाय ॥

मिश्रित पद

॥ राग गौरी ॥

नमो नमो गुरु तुम सरना।
तुम्हरे ध्यान भरम भय भागैं, जीते पाँचौ और मना ॥१॥
दुख दारिद्र मिटैं तुम नाऊँ, कर्म कटैं जो होहिं घना।
लोकपरलोकसकलबिधिसुधरैं, पग लागैं आय ज्ञान गुना ॥२॥

---

* श्रीपति = विष्णु। † आज्ञा। ‡ वरे, पीछे।

ब्रन छुए सब गति मति पलटैं, पारस जैसे लोह सुना*।
सीप परसि स्वाँती भयो मोती, सोहत है सिर राज रना ॥३॥
ब्रह्म होय जीव बुधि नासैं, जब कैसो होना मरना।
अमर होय अमरापद पावे, यह गुर कहियै गुरु बचना ॥४॥
चरनदास गुरु पूरे पाये, जग का दुख सुख क्यौं सहना।
सहजो बाई ब्याध छुटा कर, आनँद मंगल मैं रहना ॥५॥

॥ राग सोरठ ॥

(१)

हमारे गुरु बचनन की टेक।
आन धरम कूँ नाहिँ जानूँ, जपूँ हरि हरि एक ॥ १ ॥
गुरु बिना नहिँ पार उतरौ, करौ नाना भेख।
रमौ तीरथ बर्त राखौ, होहु पंडित सेख ॥ २ ॥
गुरु बिना नहिँ ज्ञान दीपक, जाय ना अँधियार।
काम क्रोध मद लोभ माहीं, उरझिया संसार ॥ ३ ॥
चरनदास गुरु दया करि कै, दिये मन्तर कान।
सहजो घट परगास हूवा, गयो सब अज्ञान ॥ ४ ॥

(२)

भया हरि रस पी मतवारा।
आठ पहर झूमत ही बीतै, डार दिया सब भारा ॥ १ ॥
इड़ा पिँगला ऊपर पहुँचे, सुखमन पाट उघारा।
पीवन लगे सुधारस जब ही, दुर्जन पड़ो बिडारा ॥ २ ॥
गंग जमन बिच आसन मारयौ, चमक चमक चमकारा।
भँवर गुफा मैं दृढ़ ह्वै बैठे, देख्यौ अधिक उजारा ॥ ३ ॥

---

*सोना।

चित इस्थिर चंचल मन थाका, पाँचो का बल हारा।
चरनदास किरपा सूँ सहजो, भरम करम हुए छारा ॥४॥

॥ राग मलार ॥

(१)

हमारे गुरू पूरन दातार।
अभय दान दीनन को दीन्हे, कीन्हे भवजल पार ॥ १ ॥
जन्म जन्म के बंधन काटे, जम की बंध निवार।
रंक हुते सो राजा कीन्हे, हरि धन दियो अपार ॥ २ ॥
देवैं ज्ञान भक्ति पुनि देवैं, जोग बतावनहार।
तन मन बचन सकल सुखदाई, हिरदे बुद्धि उँजियार ॥३॥
सब दुख-गंजन पातक-भंजन, रंजन ध्यान बिचार।
साजन दुर्जन जो चलि आवै, एकहि दृष्टि निहार ॥ ४ ॥
आनँद रूप सुरूप मई है, लिप्त नहीं संसार।
चरनदास गुरू सहजो के रे, नमो नमो बारम्बार ॥ ५ ॥

(२)

अस जन धन जननी जिन जाये।
दूसर कुल में भक्ति नहीं थी, जा कूँ तारन आये ॥१॥
कारन परमारथ तन धारयो, बहुतक जीव उबारे।
खेवट ह्वै भवसागर माहीं, सरन लगे सो तारे ॥२॥
मुक्ति सरूप भूप मन जीते, आसा सकल जराये।
भक्ति खेत में लोभ खरतवा*, ता कूँ रहन न पाये ॥३॥
ज्ञान जोग को सूरज प्रगट्यो, बानी किरन पसारी।
चार दिसा में भयो उजारो, चौंक उठे नर नारी ॥४॥
प्रेम झलाझल नैनन माहीं, हिरदे सीतलताई।
नख सिख सील सँतोष छिमा हीं, बरनै सहजो बाई ॥ ५ ॥

---

* मोथ घास जिस की जड़ बड़ी लम्बी होती है।

(३)

सखीरी आज धन धरती धन देसा।
धन डहरा मेवात मँझारे, हरि आये जन भेसा ॥१॥
धन भादोँ धन तीज सुदी है, धन दिन मंगलकारी।
धन दूसर कुलबालक जनम्यौ, फुल्लित भये नर नारी ॥२॥
धन धन माई कुंजो रानी, धन मुरलीधर ताता।
अगले दत्तव* अब फल पाये, तिन कैसुत भयो ज्ञाता ॥३॥
भरम नसावन भक्ति बढ़ावन, बहु पारायन† करता।
सब फल दायक सब कुछ लायक, अघमोचन दुख हरता ॥४॥
अनगिन बरस बहुल चिरजीवौ, गुरु सुकदेव सहाई।
सहजो बाई देत असीसैं, पावै दरस बधाई ॥५॥

(४)

सखीरी आज जन्मे लीला धारी।
तिमिर भजैगो भक्ति खिड़ैगो‡, पारायन नर नारी ॥१॥
दरसन करते आनँद उपजै, नाम लिये अघ नासै।
चर्चा मेँ सन्देह न रहसी, खुलिहै प्रबल प्रगासै ॥२॥
बहुतक जीव ठिकानो पैहैँ, आवागवन न होई।
जम के दंड दहन पावक की, तिन कूँ मूल निकोई§ ॥३॥
होइ है जोगी प्रेमी ज्ञानी, ब्रह्म रूप ह्वै जाई।
चरनदास परमारथ कारन, गावै सहजो बाई ॥ ४ ॥

(५)

सखीरी आज जन्म लियौ सुखदाई।
दूसर कुल मेँ प्रगट हुए हैँ, बाजत अनँद बधाई ॥१॥
भादोँ तीज सुदी दिन मंगल, सात घड़ी दिन आये।
सम्वत सत्रहसाठ¶ हुते तब, सुभ समयो सब पाये ॥२॥

---

*शुभ करनी। †परिपूर्ण। ‡खिलैगी। §उखाड़ दिया। ¶सत्रह सौ साठ।

जैजैकार भयौ मधि गाऊँ, मात पिता मुख देखौ।
जानत नाहिँन कौन पुरुष हैं, आये हैं नर भेखौ ॥ ३ ॥
संग चलावन अगम पन्थ कूँ, सूरज भक्ति उदय को।
आप गुपाल साध तन धार्यौ, निहचै मो मन ऐसो ॥४॥
गुरु सुकदेव नाँव धरि दीन्ह्यौ, चरनदास उपकारी ॥
सहजो बाई तन मन वारै, नमो नमो बलिहारी ॥ ५ ॥

(६)

सखीरी आज आनँद देव बधाई।
सतगुरु ने औतार लियो है, मिलि मिलि मंगल गाई ॥१॥
अद्भुत लीला कहा बखानौं, मो पै कही न जाई।
बहु बिधि बाजे बाजन लागे, सुनत हिया हुलसाई ॥२॥
धन भादौं धन तीज सुदी है, जा दिन प्रगटे आई।
धन धन कुंजो भाग तिहारे, चरनदास सुत पाई ॥३॥
कलिजुग में हरिभक्ति चलाई, जन को करैं सहाई।
श्री सुकदेव करी जब किरपा, गावै सहजो बाई ॥४॥

॥ राग बिलावल ॥

(१)

मुकट लटक अटकी मन माहीं।
नृतत नटवर मदन मनोहर, कुंडल झलक अलक* बिथुराई ॥१॥
नाक बुलाक हलत मुक्ताहल, होठ मटक गति भौंह चलाई।
ठुमक ठुमक पग धरत धरनि पर, बाँह उठाय करत चतुराई ॥२॥
झुनक झुनक नूपुर झनकारत, तता थेई थेई रीझ रिझाई।
चरनदास सहजो हिये अन्तर, भवन करौ जित रहौ सदाई ॥३

(२)

हरि बिनु तेरो ना हितू, कोइ या जग माहीं।
अन्त समय तू देखि ले, कोइ गहै न बाँहीं ॥ १ ॥

---

* घुँघराली लटैं।

जम सूँ कहा छुटा सकै, कोइ संग न होई।
नारी हू फटि रहि गई, स्वारथ कूँ रोई ॥ २ ॥
पुत्र कलित्तर कौन के, भाई अरु बन्धा।
सब ही ठोक जलाइ हैं, समझै नहिं अन्धा ॥ ३ ॥
महल दरब ह्याँ ही रहै, पचि पचि करि जोड़ा।
करहा गज ठाढ़े रहैं, चाकर और घोड़ा ॥ ४ ॥
पर काजै बहु दुख सहे, हरि सुमिरन खोया।
सहजो बाई जम घिरैं*, सिर धुनि धुनि रोया ॥ ५ ॥

॥ राग काफी ॥

नैनों लख लैनी साईं तैंड़े हजूर।
आगे पीछे दहिने बायें, सकल रहा भरपूर ॥ १ ॥
जिन को ज्ञान गुरू को नाहीं, सो जानत हैं दूर।
जोग जज्ञ तीरथ ब्रत साधैं, पावत नाहीं कूर ॥ २ ॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल जिमीं में, सोई हरि का नूर।
चरनदास गुरु मोहिं बतायौ, सहजो सब का मूर ॥ ३ ॥

॥ राग असावरी ॥

बाबा काया नगर बसावौ।
ज्ञान दृष्टि सूँ घट में देखौ, सुरति निरति लौ लावौ ॥१॥
पाँच मारि मन बसि कर अपने, तीनौं ताप नसावौ।
सत सन्तोष गहौ दृढ़ सेती, दुर्जन मारि भजावौ ॥२॥
सील छिमा धीरज कूँ धारौ, अनहद बंब बजावौ।
पाप बानिया रहन न दीजै, धरम बजार लगावौ ॥३॥
सुबस बास होवै जब नगरी, बैरी रहै न कोई।
चरनदास गुरु अमल बतायौ, सहजो सँभलौ सोई ॥४॥

---

* जब जम ने घेर लिया।

॥ राग बसंत ॥

आयौ बसंत धन मेरे भाग । पाँचौ गावैं एक राग ॥१॥
और पचीसौं उनके संग । सो भी भींगे सरस रंग ॥२॥
मतवारे भये मन से भूप । सखि बिसरीं सब अपना रूप ॥३
नगर लोग नहिं तन सँभार । मगन भये सब बार बार ॥४।
कह्यो न जाय उपज्यो अनन्द । और खेल सब भये मन्द ॥५॥
तिरबेनी तट करि बिहार । पीवत बैठे अमी धार ॥६॥
जोति बाल पूजे सुदेव । अगम अगोचर पायौ भेव ॥७॥
सीस भेंट जो दीन्हो जाय । दरसन कीन्हे अति अघाय ॥८॥
चरनदास गुरु दई सैन । सहजो बाई पायो चैन ॥९॥

॥ राग होरी धनासरो ॥

(१)

साधो मन माया के संग, सब जग रंग रह्यो ॥ टेक ॥
मूरख पचे खेल के अंधरे, नाना स्वाँग बनाय ।
आसा धरि धरि नाचन लागे, चोवा चाह लगाय ॥ १ ॥
जोग करै सिधि आठौं चाहै, मान बड़ाई हेत ।
राज बासना भोग लोक के, कासा करवत लेत ॥ २ ॥
पंच अगिन बहु तापन लागे, बहुत अर्धमुख झूल ।
बहुतक दौड़ैं अससठ तीरथ, ज्ञान गली गये भूल ॥ ३ ॥
चरनदास गुरु तत्त लखायौ, दीन्हे खेल छुटाय ।
सहजो बाई सीस निवावत, बार बार बलि जाय ॥ ४ ॥

(२)

मैं तो खेलूँ प्रभु के संग, होरी रंग भरी ।
जित देखूँ तित रमि रहौ रे, सब में ब्यापक है हरी ॥१॥
सब कुछ भयो दियो सुख जनकूँ, अद्भुत लीला है करी ।
नाना जतन किये मिलवे कूँ, प्रीतम पाये हम घरी* ॥२॥

---

* घर ही में ।

पावत ही सब भ्रम भय भागे, आवागवन छुटी लरी † ।
जीवन मुक्त भयौ मन मेरौ, ब्याधा सब आसा जरी ॥३॥
अमर लोक पद फगुवा पायौ, जनम मरन बिपता दली ।
चरनदास गुरु किरपा कीन्ही, सहजो हिये आनँद रली ॥४॥

॥ राग काफी ॥

हरि हर जप लेनी औसर बीतो जाय ।
जो दिन गये सो फिर नहिँ आवैं, कर बिचार मन लाय ॥
या जग बाजो साच न जानो, ता में मत भरमाय ।
कोइ किसी का है नहिँ बैरी, नाहक लियो लगाय ॥
अंत समय कोइ काम न आवै, जब जम देहि बोलाय ।
चरनदास कहैं सहजो बाई, सत संगत सरनाय ॥

॥ राग बसंत ॥

(१)

आतम पूजा अधिक जान । सकल सिरोमन याहि मान॥
बिस्तारो हित भवन* माहिँ । भरम दृष्टि जहँ आवै नाहिँ॥
हिरदा कोमल ठौर लिया । कर बिचार जहँ धूप दिया॥
या सेवा का दया मूल । समता चंदन छिमा फूल ॥
मीठे बचन सोइ बालभोग । निंदा झूठ तजो अजोग ॥
घंटा अनहद सुरत लाव । घट घट देखै एक भाव ॥
करौ सुखी सुख आप लेव । इस पूजा सौँ सुखी देव ॥
चरनदास गुरु दई मोहिँ । हंस हंस जहँ जाप होहि ॥
इन्द्री मन बुध तहँ लगाव । कर सहजो बाई याको चाव॥

(२)

सो बसंत नहिँ बार बार । तैं पाई मानुष देह सार ॥
यह औसर बिरथा न खोव । भक्ति बीज हिये धरती बोव॥

---

† डोरी । * अंतर, घट ।

सतसंगत को सींच नीर। सतगुर जी सों करौ सीर ॥
नीकी बार बिचार देव। परन राख या कूँ जु सेव ॥
रखवारी कर हेत हेत। जब तेरी होवै जैत जैत ॥
खोट कपट पंछी उड़ाव। मोह प्यास सबही जलाव ॥
सँभलै बाड़ी नऊ अंग। प्रेम फूल फूलै रँग रंग ॥
पुहुप गूँध माला बनाव। आदि पुरुष कूँ जा चढ़ाव ॥
तौ सहजो बाई चरनदास। तेरे मन की पुरवैं सकल आस

(३)

मिलि गावो रे साधो यह बसंत।
जाकी अविगत लीला अगम पंथ ॥

जहँ नाव पदारथ है इकंग। नहिँ पैये दूजा और अंग ॥
जहँ दरसै साधो एक एक। नहिँ पैये दूजा कोई भेष ॥
जहँ ज्ञान ध्यानको लगो तार। जहँ आप बिराजै ओंकार ॥
देखो सब घट ब्यापक निराकार। कोई न पावै वह बिचार ॥
जहँ ब्रह्म अखंडित अति अनूप। जाको सुर मुनि जोगी ध्यावै भूप॥
जहँ छाय रहो है सर्ब माहिँ। कोइ नाहिँ संतो खाली ठाहिँ॥
गुर चरनदास पूरन औतार। जिन दान दियो जग ब्याध टार॥
सहजो बाई नावै सीस। मेरे भ्रम मेटे बिस्वाबीस ॥

॥ राग होरी ॥

साधो भौसागर के माहिँ, काल होरी खेलाई। टेक॥
भाँति भाँति के रंग लिये हैं, करत जीवन की घात।
बूढ़ा बाला कछू न देखै, देखै ना दिन रात ॥१॥
निहचै मौत लिये सँग रानी, नाना रंग सम्हार।
बड़े बड़े अभिमानी नामी, सो भी लीन्हे मार ॥२॥
सुरज चंद वा भयतेँ काँपैँ, स्वर्ग माहिँ सब देव।
तन-धारी सबही थर्रावैँ, ज्ञानी जानत भेव ॥३॥

आपन कूँ देही नहिँ जानै, जानत आतम साच ।
चरनदास कह सहजो बाई, ताहि न आवै आँच ॥४।

॥ राग होरी ॥

सुमिर सुमिर नर उतरो पार, भौसागर की तीछन धार॥टेक
धर्म जिहाज माहिँ चढ़ि लीजै, सँभल सँभल तामैँ पग दीजै।
सम करि मन को संगी कीजै, हरि मारग को लागौ यार।१
बादवान पुनि ताहि चलावै, पाप भरै तौ हलन न पावै।
काम क्रोध लूटन को आवै, सावधान ह्वै करौ सँभार॥२॥
मान पहाड़ी तहाँ अड़त है, आसा तृस्ना भँवर पड़त है॥
पाँच मच्छ जहँ चोट करत हैं, ज्ञान आँखि बल चलौ निहार॥३॥
ध्यान धनी का हिरदे धारै, गुरु किरपा सूँ लगै किनारै
जब तेरी बोहित उतरै पारे, जन्म मरन दुख बिपता टार
चौथे पद मैँ आनँद पावै, या जग मैँ तू बहुरि न आवै
चरनदास गुरदेव चितावैँ, सहजो बाई यही बिचार ॥५॥

॥ राग ललित ॥

जाग जाग जो सुमिरन करै। आप तरै औरन ले तरै॥टेक
हरि की भक्ति माहिँ चित देवै। पद पंकज बिन और न सेवै।
आन धरम कूँ संग न लेवै। फलन कामना सब परिहरै॥१
काल ज्वाल सबही छुट जावै। आवा गवन की डोरि नसावै।
जोनी संकट फिरि नहिँ आवै। बार बार जनमै नहिँ मरै॥२
ऊँची पदवी जग मैँ पावै। राजा राना सीस नवावै।
तन छूटे जा मुक्ति समावै। जो पै ध्यान धनी का धरै॥३
ह्याँ पै सुख जो जानै कूरा। गुर चरनन मैँ लागै पूरा।
बेग सम्हारै जो जन सूरा। चरनदास सहजो हो अरै॥४॥

॥ राग बिलावल ॥

तुम गुनवंत मैँ औगुन भारी।
तुम्हरी ओट खोट बहु कीन्हे, पतित-उधारन लाल बिहारी ॥१॥

खान पान बोलत अरु डोलत , पाप करत है देह हमा।
कर्म बिचारौ तौ नहिं छूटौं , जो छूटौं तौ दया तुम्हारी॥२३
मैं अधीन माया बस हो करि , तुव सुधीन माया सूँ न्यारे।
मैं अनाथ तुम नाथ गुसाँई , सब जीवनके प्रान पियारे ॥
भौसागर में डर लागत मोहिं, तारौ बेगहि पार उतारी।
चरनदास गुर किरपा सेती, सहजो पाई सरन तिहारी॥४॥

॥ राग ईमन ॥

ज्यौं त्यौं राम नाम ही तारै ।
जान अजान अग्नि जो छूवै, वह जारै पै जारै ॥१॥
उलटा सुलटा बीज गिरै ज्यौं, धरती माहीं कैसैं ।
उपजि रहै निहचै करि जानो, हरि सुमिरन है ऐसै ॥२॥
बेद पुरानन में मथि काढ़ा, राम नाम तत सारा ।
तीन कांड*में अधिकी जानो, पाप जलावनहारा ॥ ३ ॥
हिरदा सुद्ध करै बुधि निरमल, ऊँची पदवी देवै ।
चरनदास कहैं सहजो बाई, ब्याधा सब हरि लेवै ॥४॥

॥ राग रामकली ॥

अब तुम अपनो ओर निहारो ।
हमरे औगुन पै नहिं जाओ, तुमहीं अपना बिरद सम्हारो १
जुग जुग साख तुम्हारी ऐसी, वेद पुरानन गाई ।
पतित-उधारन नाम तुम्हारो, यह सुनके मन दृढ़ता आई॥२
मैं अजान तुम सब कछु जानो, घट घट अंतरजामी ।
मैं तो चरन तुम्हारे लागी, हो किरपाल दयालहि स्वामी॥३
हाथ जोरि के अरज करत हौं, अपनाओ गहि बाहीं ।
द्वार तिहारे आय परी हौं, पौरुष गुन मो में कछु नाहीं॥४॥

*लोक ।

चरनदास सहजिया तेरी, दरसन की निधि पाऊँ।
लगन लगी अरु प्रान अड़े हैं, तुमको छोड़ कहो कित जाऊँ॥

॥ राग भैरौ ॥

हम बालक तुम माय हमारी। पल पल माहिँ करो रखवारी१
निस दिन गोदीही में राखो। इत वित बचन चितावन भाखो२
बिषै ओर जान नहिँ देवो। दुरदुरजाउँ तो गहि गहि लेवो३
मैं अनजान कछू नहिँ जानूँ। बुरोभलो को नहिँ पहिचानूँ॥४
जैसी तैसी तुमहीं चीन्हेव। गुरु है ध्यान खेलैाना दीन्हेव॥५
तुम्हरी इच्छा ही से जोऊँ। नाम तुम्हारो इमृत पीऊँ॥६।
दिष्टि तिहारी ऊपर मेरे। सदा रहूँ मैं सरनै तेरे॥७॥
मारो झिड़को तौ नहिँ जाऊँ। सरक सरक तुमहीं पै आऊँ८
चरनदास है सहजो दासी। हो रिच्छक पूरन अबिनासी।९

॥ राग सोरठ ॥

जग में कहा कियो तुम आय।
स्वान की ज्योँ पेट भरिकै, सोवो जन्म गँवाय॥
पहर पिछले नाहिँ जागो, कियो ना सुभ कर्म।
आन मारग जाय लागो, लियो ना गुरु धर्म॥ २॥
जप न कीयो तप न साधो, दियो ना तैँ दान।
बहुत उरझी मोह मद में, आपु काया मान॥ ३॥
देह घर है मौत का रे, आन काढ़ै तोहि।
एक छिन नहिँ रहन पावै, जब कैसे कुछ होय॥ ४॥
रैन दिन आराम ना, काटै जो तेरी आव।
चरनदास कहैँ सुन सहजिया, अब करो भजन उपाव॥५॥

॥ राग कान्हरा ॥

सठ तजि नाँव जगत सँग राचो।
जेहि कारन बहु स्वाँग कछे हैं, चौरासी तन धरि धरि नाचो१

गर्भ माहिँ जे बचन किये थे, एकहु बार भयो नहिँ साचो ।
स्वारथ ही को उठि उठि धावै, राम भजन परमारथ काचो२
संतन की टकसाल चढ़ो ना, गुर की हाट कबहुँ नहिँ जाँचो।
पंच बिषै के मद में मातो, अभिमानी ह्वै बहुतक नाचो ॥३॥
जमद्वारे की लाज न मानी, नरक अगिन को सहि सहि आँचो ।
चरनदास कहै सहजो बाई, हरि की सरन बिना नहिँ बाचो ४

॥ राग सारँग ॥

(१)

हमरे औषध नाँव धनी का ।
आध ब्याध तन मन की खोवै, सुद्ध करै वह नीका ॥१॥
अमर भये जिन जिन यह खाई, भव नगरी नहिँ आये ।
जो पछ करै सँभल दृढ़ राखै, सतगुर बैद बताये ॥२॥
सतसंगत को भवन बनावै, पड़दा लाज लगावै ।
जगत बासना पवन चलत है, सो आवन नहिँ पावै ॥३॥
सूभ करम लै टेक टहलुवा, दीपक ज्ञान जलावै ।
नितय अनित्य बिचार सार गहु, हो आसार बगावै ॥४॥
जीव रूप के रोग भगैँ यौँ, ब्रह्म रुप ह्वै जावै ।
सहजो बाई सुन हुलसावै, चरनदास बतलावै ॥५॥

(२)

तेरी लीला अधिक सोहावनी ।
देखि देखि मन हुलसत है, सँतन के मन भावनी ॥१॥
तत गुन करि ब्रह्मंड बनायौ, अधर धर्यौ अचरज भयौ ।
जाके मध्य यही संसारा, भाँति भाँति रँग रँग ह्यौ ॥२॥
सात दीप नौ खंड रचे हैँ, सुरग मिरत पाताल हीँ ।
इच्छा करत सबै बनि आयौ, होइ गयौ ततकाल हीँ ॥३॥
माया अगम अपार तुम्हारी, बरन सकै कहा बेद है ।
तीन गुनन तक बुध पहुँचत है, परे तुम्हारो भेद है ॥४॥

छिन में उतपति परलै छिन में, जो चाहै सब कुछ बनै।
चरनदास गुरु दृष्ट देइ जब, गुनाबाद सहजो भनै ॥५॥

(३)

परो मन हरि गुन गावत बान ।
बिन गोपाल और जो भाखै, तौ तोहि गुरु की आन ॥१॥
बेद माहिँ ब्रह्मा गुन गावै, संकर सींगी माहिँ ।
सेस सहस मुख निस दिन गावै, समै बिचारत नाहिँ ॥२॥
बीन लिये नारद मुनि गावैं, गावैं ब्यास उचार ।
गनपति सारद गान करत हैं, गंधर्ब सभी पुकार ॥३॥
गुनाबाद गावत प्रभु परसन, बड़े भक्त को भाव ।
सुकदेव गाव चरन हौं दासा, सहजो कूँ भी चाव ॥४॥

॥ राग पुरबी ॥

(१)

हरि कौ कोइ न जानत भेद ।
सब के बड़े सोई पचि हारे, नेत नेत कहि बेद ॥ १ ॥
नाल माहिँ ब्रह्मा नहिं आयो, थाकि फिरत केहि कौन ।
जोग ध्यान करि संकर हारे, थाह लेत भये लीन ॥ २ ॥
भेद न पायो सेस सारदा, सुरपति और गनेस ।
बामदेव और सनकादिक, निरे भक्त के भेस ॥ ३ ॥
ज्ञानी गुनी मुनी रिषि तेते, जेते जोगेसुर साध ।
चरनदास कह सहजो बाई, पंडित पोथी लाद ॥ ४ ॥

(२)

मन तोहि कब उपजैगी ग्यान ।
इंद्रिन के रस सूँ छुटि निर्मल, पारब्रह्म गलतान ॥ १ ॥
जग सूँ पीठ कहो कब दैहौ, सनमुख हरि की ओर ।
साधोँ की संगत कब करिहौ, कुल कुटुँब को छोड़ ॥ २ ॥
जप करिबे को कब तुम लगिहौ, चरन कमल के ध्यान ।
निस दिन आयु घटै तन छीजै, मनुष जनम की हान ॥३॥

तुम जो कहो मैं काल्ह करूँगो, काल्ह काल के हाथ ।
जा कारन ऐसो मति उपजै, सो झूठा है साथ ॥ ४ ॥
चरनदास गुरु मोहिं बतायो, सहजो हिरदे राख ।
भजनहिं एकसार बरतु है, सब मिलि बेद पुरानन भाख ॥५

॥ राग बिलावल ॥

गुबिंद गुन क्यों नहिं गावो ।
ममतानींद कहा मनसूतो, जागजागहरिसों चितलावो ॥१॥
गुन गावत बहु पतित ऊधरे, ऊँचो पदवी दीन्ही ।
जाति बरन सूँ ऊपर कीन्ही, आध व्याध बिपता हरि लीन्ही ॥ २ ॥
भौजल पार भये थिर हूए, आवागवन नसायो ।
वैसोही तुम्हरी गति होगी, करिजै औसर नीको पायो ॥३॥
आधी रात औ तरुन अवस्था, उठि करि ध्यान लगावै ।
ता की अस्तुति सेस करत है, सिव ब्रह्मादिक सीसनवावै ॥४
चरनहिं दास बनो पद सेवौ, गुरु उपदेस सँभारो ।
सहजो नवधा भक्ति करीजै, आप तिरौ औरन कूँतारौ॥५॥

॥ रागजैजैवंती ॥

(१)

दसो दिसा देख तो कूँ और कोई नाहीं ।
नख सिख राज रह्यो, बेदन के मद्ध कह्यो ।
सूत रह्यो की माला भयो, ऐसे हो सब माहीं ॥ १ ॥
सिंध हूँ को लहरैं जानौ, ता में सब पानी मानौ ।
ऐसे नाहिं दूजा ठानौ, साईं साईं साईं ॥ २ ॥
ईसुर को रूप छयौ, ब्रह्मंड सब होइ रह्यो ।
नान्ह ही सरूप हयौ, तेरो गति पाई ॥ ३ ॥

चरनदास गुरु दई, आतम बिचार लई।
सहजो बाई नाहिं रही, जैसे जल झाईं ॥ ४ ॥

(२)

मेरे इक सिर गोपाल और नहीं को भाई ॥ टेक ॥
आइ बैस हिये माहिं, और दूजा ध्यान नाहिं।
मेरे तो सर्बस उन, औ हिताई वोई ॥ १ ॥
जाति हूँ की कान तजी, लोक हूँ की लाज भजी।
दोनों कुल माहिं बजी, कहा करै सोई ॥ २ ॥
उघरी है प्रीत मेरी, निहचै हुई वा की चेरी।
पहिरि हिये प्रेम बेरी, टूटै नहीं जोई ॥ ३ ॥
मैं जो चरन दास भई, गति मति सब खोइ दई।
सहजो बाई नहीं रही, उठि गई दोई ॥ ४ ॥

॥ राग परज ॥

तेरी गति किनहुँ न जानी हो।
ब्रह्मा सेस महेसुर थाके, चारो बानी हो ॥ १ ॥
बाद करंते सब मत थाके, बुद्धि थकानी हो।
बिद्या पढ़ि पढ़ि पंडित थाके, अरु ब्रह्मज्ञानी हो ॥ २ ॥
सब के परे जु अनभय हारी, थाह न आनी हो।
छान बीन करि बहुतक थाकी, हुई खिसानी हो ॥ ३ ॥
सुर नर मुनि जन गनपति थाके, बड़े बिनानी हो।
चरनदास थकी सहजो बाई, भई सिरानी हो ॥ ४ ॥

(२)

तेरी गति सब में जानी हो ॥ १ ॥
बिधि निषेध करि देखा तो कूँ, लिया पिछानी हो ॥ २ ॥
तत पद त्वं पद असि पद तूहीं, यह न लुकानी हो ॥ ३ ॥

तो बिन दूजा नेक न क्यौं ही, यह मन आनी हो ॥४

चरनदास नाहिं सहजो बाई, दुबिधा मानी हो ॥५॥

॥ राग कड़वा ॥

करी मोहिं दास जो आपनी जानि कै,
राखियो दृष्टि तुम सदा नीकी ।
और कोइ आसरो धरूँ ना जगत में,
मानियो साच मैं कहूँ ठोकी ॥१॥
तुही मात औ पिता बंधू तुही,
तुही कुल नात है गोत मेरा ।
तुही धन धाम औ जीव इस देह का,
तो बिना और दूजा न हेरा ॥ २ ॥
जाप तेरा करुँ ध्यान हिरदे धरुँ,
समुझि कै ज्ञान तो कूँ पिछानूँ ।
सरन तेरी लई टेक ऐसी गही,
तुम बिना आन कूँ नाहिँ जानूँ ॥३॥
गही जब बाँह बिख्यात जग में भई,
सकल लज्जा तुम्हैं है गोसाईं ।
कलू* के काल† में महा भयमान हूँ,
चरन हूँ कवल की राखि छाईं ॥४॥
कहत सहजो दोऊ हाथ को जोरि कै,
सीस नीचा किये दीन धारे ।
चरनदास गुरु अरज सुनि लीजिये,
तुही है इष्ट आसा हमारे ॥५॥

॥ इति सहज प्रकाश की पोथी संपूर्ण ॥

---

* कलयुग । † समय ।